भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार ...

# Model Answer Key

**Date : 02/06/2019**

## PART - A
## 3 MARKS

**A. चन्हूदड़ो**

– 1939 एम.जी. मजूमदार

– 1935 मैके

– पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर मनके बनाने की फैक्ट्री, वक्रादार ईंटे आदि।

**B. सांख्य दर्शन**

– प्राचीनतम दर्शन

– प्रवर्तक – महर्षि कपिल

– इसे संख्या का दर्शन भी कहते है।

– प्रकृति और पुरूष भी सत्ता को स्वीकारता है।

**C. पार्श्वनाथ – 23वें तीर्थंकर**

– काशी नरेश अश्वमेद्य के पुत्र सम्मेद पर्वत पर 30 वर्ष की आयु में ज्ञानप्राप्ति व 4 सिद्धांत सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय 100 वर्ष की आयु में मृत्यु।

**D. सीताध्यक्ष**

– राजकीय कृषि विभाग का प्रमुख

– यह दासों, कर्मकारों तथा बंदियों की सहायता से खेती करवाता था।

– राजकीय भूमि से प्राप्त आय को एकत्रित करता था।

**E. ऐहोल अभिलेख**

– पुलकेशिन द्वितीय का रविकीर्ति द्वारा रचित वर्तमान में कर्नाटक में मेगुती मंदिर में पुलकेशिन द्वितीय द्वारा हर्षवर्धन को हराने का वर्णन, कालिदास एवं भारवि भी उल्लेख।

**A. Chanhudaro**

- 1934 N.C. Majumdar
- 1935 Macay
- situated in Pakistan on the Bank of Indus, Bead Factory, Cavled bricks etc.

**B. Sankhya Darshan**

- Oldest Darshan
- Promoted by Maharshi Kapil
- Known as a Philosophy of numbers believe in Nature and Parush

**C. Parshavanath**

- 23rd Tirhthankar
- Son of Kashi ruler Ashwasen attain knowledge at the age of 30 at Sammad hill, four principal. Truth, non-violence, not-steating, not-storing died at the age of 100.

**D. Sitadhayaksh**

- Head of state agriculture department
- It used to be farmed with the help of slaves, workers and prisoners.
- Collected income from the state land.

**E. Aihole Inscription**

Related to Pulkesin II

- Written by Ravikirti, Situated at Meguti Temple of Karnataka Pulkesin II defeated Harshwardhan also describe about Kaldasa and Bharavi.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

**F. मामल्लपुरम**

– पल्लव नरेश नरसिंह वर्मन प्रथम द्वारा स्थापित, तमिलनाडु में वर्तमान नाम महाबलिपुरम, सप्तपेगोडा, तट मंदिर आदि के लिये प्रसिद्ध।

**G. खारवेल**

– कलिंग (उड़ीसा) के चेदि वंश का शासक, हाथीगुम्फा अभिलेख से जानकारी मिलती है। जैन धर्म का अनुयायी, नहर बनवाई, मगध पर आक्रमण किया।

**H. राज्यपाल गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक**

– 1818 में कन्नौज में महमूद गजनवी के आक्रमण के दौरान भाग गया, अतः चंदेल विद्याधर द्वारा मारा गया।

**I. इब्नबतूता**

– मोरक्को का यात्री, वह 1333 मुहम्मद बिन तुगलक के समय भारत आया, दिल्ली का काजी बना। राजदूत बनाकर चीन भेजा गया।

– रचना – किताब उल–रेहला

**J. माजलिस–ए–खलवत**

– सल्तनत काल की मंत्रिपरिषद् को कहते थे। यह सुल्तान को सलाह व सहायता देती थी। लेकिन सुल्तान इनकी सलाह मानने को बाध्य नही था।

– बैठक स्थल – मजलिस–ए–खास।

**K. कोप्पम का युद्ध**

– 1052 यह युद्ध चोल नरेश राजाधिराज एवं कल्याणी चालुक्य सोमेश्वर के बीच हुआ, जिसमें राजाधिराज की मृत्यु हुई लेकिन उसके छोटे भाई राजेंद्र द्वितीय ने सोमेश्वर को पराजित कर दिया।

**L. राजा कुम्भा**

– 1431–1473

– मेवाड़ के सिसोरिया वंश का शासन मेवाड़ में 32 किले बनवाये, चित्तौड़ में कीर्ति सतंभ बनवाया।

– गीत गोविंद पर रसिक प्रिया, नाम से टीका लिखी।

– संगीत पर संगीत राज संगीत रत्नाकर, संगीत मीमांसा लिखी।

**F. Mammlapuram**

- Founded by Pallav Ruler Narsingh Varmain I
- In Tamilnadu
- Present Name : Mahabalipuram
- Famous for Sapt. Pagoda Shore Temple etc.

**G. Kharvel**

- Ruler of Chedi Dynasty of Kalinga (Odisha)
- Found details from Hathigumpha inscription
- Devotee of Jainism, constructed canal in Kalinga, attack on Magadha.

**H. Ruler of Gurjar-Pratihar**

- In 1018 he ran away from Kannauj when Mahmud Gaznavi attacked on him. He was killed by Chandel ruler Vidhyadhar

**I. Ibanbatutta**

- Maracco traveller he came in India 1333 at the time of Mahmud bin Tughlaq.
- Become the Quazi of Delhi, went to China as a Ambassador
- Book - Kitab-ul-Rehla

**J. Majlis-e-Khalwat**

- It wa a council of Minister of Sultnat Period.
- It advise and help Sultan but Sultan was not bound. to follow its advice.
- Their Sitting held at Majlis-e-Khas

**K. Battle of Koppam**

- 1052 The battle was held between Chola king Rajadhiraj and Kalyani's Chalukya ruler Someshwar. Rajadhiraj was killed in this battle but his younger brother Rajendra II defeated Someshwar.

**L. Rana Kumbha**

- 1431-1473
- Ruler of Sisodiya dynasty of Mewar, constructed 32 fort in Mewar and Kirthi Stambh (Tower) in Chittor.
- Wrote comment on get govind in the name of Rasik Priya
- Wrote Sangeet Raj, Sangeet Ratnakar, Sangeet Mimansa on Music.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

**M. वीर सिहं बुंदेला**

– बुंदेलखंड का मुगल सुबेदार
– जहांगीर के समय मनसबदार बना
– जहांगीर का मित्र
– इसी ने अबुल फजल की हत्या की थी।

**N. अष्ट प्रधान**

– शासन में शिवाजी की सहायता के लिये आठ बड़े अधिकारी जो अपने विभाग के प्रमुख थे।
– जैसे
  1. पेशवा
  2. अमात्य
  3. वकिया–नवीस
  4. सुमंत
  5. सचिव
  6. सेनापति (सर–ए–नौबत)
  7. पंडित राव
  8. न्यायाधीश।

**O. गुरू गोविंद सिंह**

– 1675–1708
– पटना में जन्म, नांदेड़ में मृत्यु
– दसवें एवं अंतिम गुरू
– औरंगजेब से संघर्ष
– 1699 में खालसा पंथ की स्थापना
– दशम पादशाह का ग्रंथ लिखा।
– 4 पुत्रों का युद्ध में बलिदान।

**M. Veer Singh Bundela**

- Mugal Subedar of Bundelkhand
- Become Mansabdar at the reign of Jahangir
- Friend of Jahangir
- He killed Abul Fazal.

**N. Ashat Pradhan**

- Eight Top Officer of Shivaji Who supported in administrater
- They were the head of there department
- like
  1. Peshwa
  2. Amatya
  3. Wakiya-Nvees
  4. Sachiv
  5. Sumant
  6. Sir-e-Naubat
  7. Pandit-Rao
  8. Nyayadhish.

**O. Guru Govind Singh**

- 1675-1708
- Born in Patna, died at Nanded
- Tenth and Last Guru
- Fought against Aurangzeb
- Established Khalsa in 1699
- Wrote Dasham Padshah ka Granth
- His four son secrefice in war.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

**6 Marks**

**(A). सिंधु सभ्यता के निर्माता आर्य थे परीक्षण करें।**

सिंधु सभ्यता इतनी विस्तृत और उन्नत होने के बावजूद सीयता के उद्‌भव व विकास के सम्वयं में विद्वानों में भारी मतभेद है।

जॉन मार्शल, गार्डन चाइल्ड, व्हीलर सैंधव सभ्यता को मेसोपोटामिया की सभ्यता को मानते है इनके अनुसार दोनों नगरीय सभ्यताएं है, कांसे, तांबे का प्रयोग किया एवं दोनों को लिपि का ज्ञान था अतः व्हीलर ने इसे मेसोपोटामिया सभ्यता का उपनिवेश भी कह दिया। परंतु दोनों के वर्तन उपकरण मूर्तिया आदि भिन्न है। सिंधु लिपि में 400 अक्षर है। जबकि मेसोपोटामिया में 900 अतः यह तथ्य तर्क संगत नहीं लगता।

लक्ष्मण स्वरूप पुलस्कर एस आर राव आदि सिंधु घाटी सभ्यता का निर्माता आर्यो को मानते हैं क्योंकि दोनों सप्त सैंधव के निवासी थे सिंधु घाटी के सर्वाधिक स्थल सरस्वती नदी के किनारे मिले है जो कि आर्यो की सबसे पवित्र नदी थी और आर्यो ने दी सिंधु घाटी के धार्मिक और सामाजिक प्रतीकों को अपनाया परंतु सिंधु का नगरीय और वैदिक का ग्रामीण होना एक बड़ी बाधा है। लेकिन ऋगवेद में पुर शब्द 85 बार और ग्राम शब्द 9 बार आया है। अतः इस विषय पर और शौध की आवश्यकता है।

मानव शक्तियों के अनुसार कंकालों से यह सिद्ध होता है कि इनके निर्माता द्रविड़ थे।

**(A). Exmine whether the Indus Valley civilization was esbtalished by the Aryans.**

In spite of being so elaborate and advanced in the Indus Civilization, there is a great difference between scholars regarding the emergence and development of indus valley civilization.

Johnn Marshall, Gordan Child, Wheeler admits the indus valley civilization. Was the civilization of Mesopotamia, according to them both civilizations, used bronze, copper and both had knowledge of script, so Wheeler also called it the colony of Mesopotamian civilization. But the behavioral device sculpture of both of them is different. 400 characters in the Indus script. While 900 in Mesopotamia, this fact does not seem logical.

Lakshman Swaroop Pulaskar S R Rao believes that Arya is the maker of the Indus Valley civilization, because both were inhabited in Sapt-Sendhave, the highest point of the Indus Valley was on the banks of the Saraswati river, which was the most sacred river of Arya and Arya used the religious of the Indus Valley And adopting social symbols, but being a rural Civilization of Vedic is a major obstacle with Sindhu. But in Rig Veda, the word Pur has come 85 times and the word gram 9 times. Therefore, there is a need for further research on this matter.

According to Anthropologist, maker of indus valley civilizationwas were Dravid.

**(B) उत्तर वैदिक काल की धार्मिक स्थिति का उल्लेख करें।**

उत्तर वैदिक काल देवताओं की महत्ता, आराधना की पद्धति और धार्मिक स्थिति में परिवर्तत दिखाई देते है।

इंद्र, वरूण, अग्नि, मित्र, का महत्व कम हो गया और उसके स्थान पर प्रजापति एवं विष्णु आ गये।

कर्मकांड और संस्कारों में जटिलता आ गयी और यज्ञ कराने के लिए बहुत प्रकार के ब्राह्मणों की आवश्यकता हो गई और बहुत प्रकार के यज्ञ आरंभ हो गये, जैसे – जैसे पुरूष मेध, चतुर्मास, अग्निहोत्र, अश्वमेद्य आदि।

एकेश्वरवादी विचारधारा का विस्तार हुआ, उपनिषद्, कर्मकांड अंधविश्वास व यज्ञों के विरोधी थे। इसके अनुसार ब्रह्म का साक्षात्कार ही मोक्ष है।

**(B). Write about the Religous condition of later vedic period.**

Later Vedic times appear to be in vogue in the importance of deities, method of worship and religious status.

The significance of Indra, Varuna, Agni, Mitra, diminished and Prajapati and Vishnu came in their place.

There was complexity in rituals and rituals and many types of Brahmins were required to offer the sacrifice and many types of yajna were started, such as like Medha, Chaturmas, Agnihotra, Ashwamedya etc.

The monotheistic ideology was expanded, Upanishads were against rituals superstitions and

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY
INDORE

इस काल में स्वर्ग नर्क की परिकल्पना, पुनर्जन्म, कर्म सिद्धांत, 4 आश्रम, आदि की उत्पत्ति हुई और उत्तर वैदिक काल का धर्म वर्तमान हिंदु धर्म का आधार बन गया।

sacrifices. Accordingly, the knowledge of Brahma is Salvation.

In this period heaven's Hellenic hypothesis, rebirth, karmic theory, 4 Ashram, etc were emerged and the religion of later Vedic period became the basis of present Hindu Dharma.

**(C) क्या अशोक का धम्म बौद्ध धर्म था ? विश्लेषण करें।**

अशोक ने 261 ईसा पूर्व में हुए कलिंग युद्ध के हत्याकांड को देखकर युद्ध नीति को त्यागकर धम्म नीति को अपनाया।

अशोक ने सामाजिक, आर्थिक एवं शासकीय आवश्यकताओं से प्रेरित होकर धम्म नीति प्रारंभ की जिसकी जानकारी दूसरे व तीसरे अभिलेख से मिलती है जिसके अनुसार धम्म अर्थात् दया, दान, सत्य, पवित्रता साधुता आदि है जबकि हत्या बलि घमंड, ईर्ष्या, क्रोध आदि की मनाही थी।

उसके धम्म की परिभाषा राहुलोवाद सूक्त से मिलती है यद्धिपी धम्म बौद्ध से प्रेरित था परंतु अपने धर्म निर्पेक्ष कल्याणकारी मानवीय स्वरूप की दृष्टि से वह सभी धर्मो की सांझी संपत्ति था।

अशोक ने रूम्मीनदेई अभिलेख के अनुसार लुम्बिनी के लोगों के करों को कम कर दिया। और स्वयं को अभिलेखों में बुद्धशाक्य कहा। अशोक ने बौद्ध धम्म यात्राएं की भाब्रू अभिलेख में बुद्ध धम्म संघ में विश्वास प्रकट किया है। लेकिन उसका धम्म कल्याण कारी एवं मानवीय स्वरूप वाला था।

अशोक का धम्म मूलतः नैतिकता आधारित था जो लोग को लोगों से एवं लोगों को प्रकृति से जोड़ता था तो आज के युग में भी प्रासंगिक है इसलिए अशोक को राजा की पोषाक में भिक्षु कहा गया।

**(C) Analyze whether Ashoka's Dhamma was similiar to Buddhism.**

Ashok, after seeing the killings of the Kalinga war in 261 BC, abandoned the war policy and adopted the Dhamma policy.

Ashoka started the Dhamma policy, inspired by the social, economic and governmental needs, whose information is available with the second and third inscription, according to which Dhamma means mercy, charity, purity, saintliness, etc. whereas sacrifice, arrogance, anger, etc were forbidden. .

His definition of Dhamma is derived from the rahulovadhsutta, Although Dhamma was inspired by the Buddhist but with the view of his secular welfare human nature. it was the common assets of all religions.

Ashoka reduced the taxes of the people of Lumbini according to the Rumindei inscription. And to call themselves Buddhasakya. Ashoka has expressed faith in the Buddha, Dhamma, Sangh in the Bhabru inscription. But his Dhamma belived in welfare of people and humanitasm.

Ashoka's Dham was originally based on ethics, which used to connect people and people with nature, then it is also relevant in today's era, so Ashoka was said to be a monk in the king's apparel.

**(D). समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए?**

गुप्त वंश का महानतम शासक जिसने अपनी असाधारण योग्यता से आर्यावर्त के 9 राजाओं, दक्षिण के 12 राजाओं, 18 आटविक राजाओं आदि को पराजित किया वह 100 युद्धों का विजेता था तथा नेपोलियन की तुलना में अधिक यर्थाथवादी था तथा उसने कभी जीवन में

**(D). Write about the achievement of Samudra Gupta.**

The greatest ruler of the Guptas dynasty who, with his extraordinary ability, defeated 9 kings of Aryavarta, 12 kings of South, 18 Atvik kings etc. He was the winner of 100 wars and was more rational than Napoleon and he did not face failure in his life.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

असफलता का सामना नहीं किया।

वह एक महान कूटनीतिक था जिसने अपनी यथार्थवादी व कूटनीति से दक्षिण के राज्यों को राज्य वापिस कर दिया सीमांत राज्यों को अधिनस्थ बनाया जिससे वे गुप्त साम्राज्य को सुरक्षा पंक्ति प्रदान कर सके।

उसने साम्राज्य का विभाजन प्रांत, विषय व ग्राम में किया, उसने अपने दरबार में लेखकों व दार्शकों को आश्रय प्रदान किया। कविराज की उपाधि ली उसके सिक्कों के अनुसार वह एक कुशल वीणावादक था।

उसने अश्वमेद्य यज्ञ किये परंतु बौद्ध व जैन धर्मो को प्रश्रय दिया। प्रयाग प्रसस्ति के अनुसार वह धरती पर निवास करने वाला देवता था।

समुद्रगुप्त की इस नीति से गुप्तकाल में हुई प्रगति ने उसे स्वर्ण युग तक पहुंचा दिया।

**(E) राजपुत कालीन कला का वर्णन करे।**

राजपूतों ने मंदिर कला को परिपक्तवा प्रदान की साथ में नवीन बातों का समावेश कर इन्हें कला के गौरव के रूप में परिवर्तित कर दिया। मंदिर निर्माण की 3 प्रमुख शैलियां थी। नागर, बैसर, नागर हिमालय से विंध्य के मध्य वेसर विंध्य से कृष्णा के मध्य और द्रविज कृष्णा के दक्षिण में थी।

इस काल के प्रसिद्ध मंदिर भुवनेश्वर का लिंगराज, कोणार्क का सूर्य मंदिर, मोदेश का सूर्य मंदिर, दिलवारा के जैन मंदिर खजुराहों के मंदिर आदि प्रसिद्ध है।

दक्षिण में वेसर शैली चालुक्यों द्वारा व द्रविड़ शैली पल्लव व चोलों द्वारा विकसित की गई इसके प्रमुख उदाहरण एलोरा का कैलाश मंदिर, पश्ट दाकल के मंदिर, महाबलिपुरम के रथ मंदिर, कांची का कैलाश ंदिर, तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर प्रसिद्ध है।

नागर शैली की प्रमुख विशेषताएं शिखर, जगमोहन, मंडप, खुला परिक्रमा मार्ग है वेसर शैली में नागर व द्रविड शैलियों का मिश्रण है जिसे चालुक्य श्रेणी भी कहा जाता है। जबकि द्रविड़ शैली भी कहा जाता है। जबकि द्रविड़ शैली में विमान, गोपुरम और एकाश्म मंदिर प्राप्त होते है।

He was a great diplomat who, with his realistic and diplomacy, He returned the area of South India to their kings and made boder area states under gupta's Empire so that he could provide a security line to the Gupta empire.

He split the empire in the province, vishay and the village, he provided shelter to writers and philosophers in his court. According to his coins, he took the title of Kaviraj, he was an accomplished harpist.

He did Ashwameda yajna, and he encouraged Buddhism and Jainism, according to the Prayag inscription, he was the god who resided on earth.

The progress made in Gupta by this policy of Samudragupta has led him to the golden age.

**(E). Describe the Art during the Rajput period.**

Rajputs have given the maturity of the temple art together with new things, and converted them into the glory of art. There were three major styles of temple building. which are as follows-

1. Nagar - Himalaya to vindhya mountain
2. Vesara - Vindhya mountain to Krishna river
3. Dravid - Krishna river to Kanyakumari

The renowned temple of this period is Lingaraj temple of bhubneshwar, Sun Temple of Konark, Sun Temple of Modhera, Temple of Khajuraho and Jain temple of Dilwara etc.

The Vesara style was developed by the Chalukya and the Dravidian style by Pallava and Cholas in the south. Like Kailash Temple of Ellora, the Temple of Patt-Dakal, the Rath Mandir of Mahabalipuram, Kailash Temple of Kanchi, and the vradishwara Temple of Tanjore.

The major features of the civil style are shikhar, Jagmohan,mandap, open Parikrama Path, a mixture of Nagar and Dravid styles in Veser style, also called Chalukya category. While Dravid style is also called. While in the Dravidian style, the Viman , gopuram and monolithic.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

**(F). भारत में सामंतवाद के प्रभावों का वर्णन करें।**

**सकारात्मक**

– सामंतवाद ने कृषि विकास को बढ़ावा दिया।

– सामंतवाद ने राजा पर प्रशासनिक उत्तरदायित्व में कमी की।

– सामंतवाद ने बाह्य आक्रमणों को रोका।

– दूरस्थ क्षेत्रों में शांति व्यवस्था बनाये रखने में मदद मिली।

– स्थानीय कला साहित्य आदि का विकास हुआ।

**नकारात्मक**

– राजा एवं जनता के मध्य संबंधों को समाप्त कर दियां

– राजा को सामंतीय सेना पर निर्भर बना दिया।

– व्यापार वाणिज्य में कमी आयी।

– क्षेत्रीय राजाओं का उदय हुआ।

– सामंतीकरण में कृषकों पर करों को बोझ बढ़ा दिया आदि।

**G. फिरोज तुगलक के सुधारों का वर्णन कीजिए :–**

– फिरोज तुगलक (1351–1388) को मुहम्मद बिन तुगलक की एक कड़वी विरासत प्राप्त हुई। अतः उसने आर्थिक सुधार, कल्याणकारी कार्य, विनिर्माण कार्य एवं तुष्टीकरण की नीति अपनायी।

आर्थिक सुधार हेतु उसने 24 प्रकार के करों को समाप्त कर केवल 4 प्रकार के कर लगाये–

1. जजिया
2. जकात
3. खम्ज
4. खिराज

और लगान को 1/3 से 1/5 कर दिया। भू–राजस्व का आंकलन कराया जो 6 करोड़ 85 लाख वार्षिक था। 1200 फलों के बाग लगवायें। 5 बड़ी नहरों का निर्माण करवाया। सिंचाई कर लगाया। इस सभी कार्यों से राजकीय आय में वृद्धि हुई।

उसने 36 कारखानों का निर्माण करवाया जिसमें दासों का कार्य पर लगा दिया गया। उसने गरीब व अनाथों के लिए दीवान–ए–खैरात, पैशन के लिए दीवान–ए–इश्तिहाक, दासों के लिए दीवान–ए–बंदगान

**(F). Write about the Impact of feudalism in India.**

**Positve**

- Promoted the development of agriculture.
- Decreased administrative responsblities of king.
- protect kingdom from external aggression
- maintain law and order in remote area
- promoted local art and culture etc.

**Negative**

- ended direct relation between king and public
- king depended on the army of feudal
- decreased trade and commerce
- rise of regional states
- increased the burden of taxes on farmer etc

**G. Write about the reforms of Feroz Shah Tughlaq.**

Firoz Tughlaq (1351-1388) received a bitter legacy of Muhammad bin Tughluq. So he adopted a policy of economic reform, welfare, construction work and appeasment.

For economic reforms, he ended 24 types of taxes and imposed only 4 types of tax-

1. Jaziya
2. Jakat
3. Khamj
4. Khiraj

And the lagaan from 1/3 to 1/5. He estimated land revenue which was 6 crore and 85 lac annual Apply 1200 fruit gardens. 5 big canals have been built. imposed Irrigation tax All these works have increased the state income.

He built 36 factories in which the slaves were put to work. He opened the Employment Office. Established Diwan-e-Khairat for poor and orphans, Diwan-i-Ishtak for the pension, Diwan-e-Bandgan for the slaves. He established cities such as Ferozabad, Hisar-Feroza, Ferozepur, Jnanpur etc. constructed 50 dams and 30 lakes.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

और बैरोजगारों के लिए रोजगार दफ्तर खोला। उसने फिरोजाबाद, हिसार–फिरोजा, फिरोजपुर, जोनपुर आदि नगरों की स्थापना की। 50 बाँध व 30 झीलों का निर्माण कराया।

इस तरह उसने साम्राज्य को समृद्ध बनाने के साथ–साथ विघटन को रोका परन्तु भूमि का ठेके पर दिया जाना, इक्ता प्रथा का वंशानुगत करना और धार्मिक कट्टरता ने उसके साम्राज्य के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके सुधार कार्यों के लिए एल. फिंस्टन उसे सल्तनत युग का अकबर कहते हैं।

**H. इक्ता पद्धति को समझाइये क्या है?**

– इक्ता पद्धति का अर्थ है भूमिखण्ड। इक्ता सैनिकों को वेतन के बदले दिया जाने वाला भूमिखण्ड है। जिसे इल्तुतमिश ने प्रारंभ किया।

इसके उद्देश्य निम्न थे

प्राचीन सामंती प्रथा को नष्ट करना

साम्राज्य के दूर स्थित प्रांतों को केन्द्र से जोड़ना।

तुर्को के सामने प्रशासन संबंधी अनेक जटिल समस्याएं थी। जितने विस्तृत क्षेत्र पर प्रशासन की जिम्मेदारी उन पर थी उसकी तुलना में उन्हें साधन कम उपलब्ध थे। इस समस्या का समाधान इक्ता व्यवस्था के माध्सम से करने का प्रयास किया गया।

स्थानीय समस्याओं का समाधान स्थानीय स्तर पर करने हेतु।

सीमाओं पर विदेशी आक्रमण के निरंतर बढ़ते हुए खतरे को रोकने के लिए

कृषक वर्ग से अधिशेष की वसूली तथ्ज्ञा इस अधिशेष का शासक वर्ग में वितरण।

विकेंद्रीयकरण की प्रवृत्ति को रोकने और केंद्रीय सत्ता की स्थापना करने के लिए।

इस प्रकार इक्ता के उद्देश्य बहुआयामी थे।

सुल्तान ने महत्वपूर्ण अमीरों को बड़े–बड़े इक्ता प्रदान किये जिन्हें भुक्ता या बलि कहा। ये अपने इक्ता से कर वसूल करके सैनिकों को वेतन देते थे। और स्वयं अपने खर्च के लिए निश्चित राशि ले लेते थे और शेष राशि (फबासिल) को केंद्रीय खजाने में जमा करना होता था।

वास्तव में इक्ता पद्धति सामंती व्यवस्था का संशोधित रूप थी। परन्तु इससे दिल्ली सल्तनत की सैन्य शक्ति में वृद्धि हुई और राज्य का विस्तार हुआ।

In this way, he was able to enrich the empire as well as prevent the dissolution but to be given on contract of land, hereditary of Ikta system and religious fanaticism played an important role in the decline of his empire. For its correction functions. Elfinston called him Akbar of the Sultanate era.

**H. What is Iqta and what were the objective of Iqta?**

- Iqta means land block Iqta is a land block for reimbursement of troops. Which Iltutmish started

- Its objectives were

Destroying ancient feudal customs

Connecting the far-located provinces of the empire to the center.

There were many complex administration problems in front of Turq. They had limited resources to manage such a large area. so they tried to solve this problem through this method.

Resolve local problems locally

To stop the ever-increasing danger of foreign invasions on the borders

Recovery of surplus from farming class and distribution of this surplus in the ruling class.

To prevent the trend of decentralization and establish a powerful central .

Thus the purpose of the Iqta was multi-dimensional.

Sultan gave large Iqta to the noble rich who called Mukta or Bali. They used to pay salaries to the soldiers by collecting taxes from their area. And they used to take certain amount for their own expenditure and the remaining amount (Fawajil) had to be deposited in the central treasury.

In fact, the Iqta system was a modified form of the feudal system. But this increased the strength of the Delhi Sultanate and expanded the area of Delhi Sultanut.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

**(I). शाहजहां का काल मुगल काल का स्वर्ण युग था? आलोचना करें।**

शाहजहाँ (1628–1658) का काल इतिहासकारों ने स्वर्णयुग कहा है।

इसकी आलोचना हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर कर सकते हैं।

– शाहजहाँ के काल में दो बार अकाल पड़े।

– भूमि को ठेके पर दी गई (इजारेदारी) जिससे किसानों का शोषण हुआ।

– शाहजहाँ के जीवित रहते उसके पुत्रों में सत्ता के लिए संघर्ष होना।

– हिन्दुओं के प्रति धर्मान्धता की नीति प्रारंभ करना –

– हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए पृथक विभाग बनाना।

– राज्य की आर्थिक दशा को सुधारने की बजाय धन को दरबार में शानो शौकत एवं इमारतों पर खर्च करना।

– शाहजहाँ का अन्त दयनीय स्थिति में होना आदि।

**(J). अकबर की आइने–ए–दहशाला का वर्णन करें।**

मुगल साम्राज्य की आय के मुख्य साधन खम्ज व्यापारिक कर, लावारिस संपत्ति, नमक कर, उद्योगों से आय और भूमि कर आदि था। राज्य की आय का सबसे बड़ा साधन भूमि कर था। अतः उसे व्यवस्थित और संगठित किया जाना आवश्यक था।

अकबर ने आइने दहशाला पद्धति के माध्यम से 1580 में टोडरमल की सहायता से एवं जमीन नापने के लिए गज–ए–इलाही का उपयोग किया जाता था।

भूमि को चार भागों पोलज, परती, चाचर, बंजर में बाँटा गया।

आइने दहशाला के तहत भूमि की पैमाइश और खेतों की वास्तविक पैदावार का पता लगाया गया और उस भूमि की पिछले 10 वर्षों की औसत पैदावार की गणना की गयी। और उसका 1/3 लगान निश्चित कर दिया। शेरशाह की भाँति ही किसानों को पट्टे दिये गये और कबूलियत प्राप्त की गयी।

यह व्यवस्था बिहार, बंगाल, मालवा, अवध, आगरा, दिल्ली, लाहौर, मुल्तान में लागू थी।

**(I). The reign of Shahjahan was the golden period of Mughal history. Critically analyze.**

Shahjahan period (1627-1658) was known as a golden period of Mughal empire

We can criticized it on following basis-

1. People faced drought during the reign of Shahjahan and bedly affected by this.
It was also described by various writer.
2. Shahjahan gave land on contract basis (izaredari) which increased exploitation of farmer.
3. First time we can see the war of succession between the son of Shahjahan.
4. Shahjahan increased religeous intolerance toward Hindus.
5. Make separate departments for making Hindus to Muslims.
6. Spand money to glorify his empire and constructed various buildings like Tajmahal although their were economic crisis.
7. Shahjahan died in very pity condition etc.

**(J). Describe the Ain-i-Dahsala of Akbar.**

The main means of income of the Mughal empire were commercial taxes, unclaimed property, salt tax, income from the industries and land tax etc. The biggest source of state income was land tax. So it was necessary to systmatic and organize.

With the help of Todramal in 1580, Akbar introduced Ain-e-dahshala method and Gaj-e-Elahi was used to measure the land. The land was divided into four parts, polaj, parti, chachar and barren.

Measurement of land and actual yield of the fields were detected under the umbrella and the average yield of the last 10 years of that land was calculated. And fixed his 1/3. Like Sher Shah, the farmers were given leases and confessions were received.

This system was implemented in Bihar, Bengal, Malwa, Awadh, Agra, Delhi, Lahore and Multan.

This increased the revenue of the Mughals, but Akbar did not completely eliminate corruption.

Akbar liked Lagaan as cash. The head of revenue collection was Diwan-e-Gala. The Tax Collecting Offcer in the province was Dewan and in the Sarkar was Amalgujar and in Pargana was Amil.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

इससे मुगलों के राजस्व में वृद्धि हुई परन्तु अकबर भ्रष्टचार को पूर्णतः समाप्त नहीं कर पाया।

अकबर ने लगान को नगद के रूप में लेना पसंद किया। राजस्व वसूली का प्रधान दीवान–ए–गाला होता था। प्रांत में दीवान और सरकार में अमलगुजार और परगना में आमिल नामक अधिकारी होता था।

इस व्यवस्था में किसानों के हितों का ध्यान रखा गया। उन्हें ऋण, बीज आदि सुविधाएं दी गई।

The interests of the farmers were taken care of in this arrangement. Mughals were provided loans, seeds etc to farmer.

**K. मुगल गोंडवाना संघर्ष का वर्णन करें।**

गोंडवाना म.प्र. के जबलपुर, दमोह, मंडला आदि क्षेत्र की प्रमुख रियासत थी, जहां पहली बार मुगल–गोडवाना संघर्ष अकबर के काम में शुरू हुआ।

गोडवाना नरेश दलवत शाह की मृत्यु के बाद रानी दुर्गावती ने वीरनारायण की सरंक्षिमा बनकर शासन किया। तब मुगल सेनापति आसफ खाँ वे साम्रज्यवादी नीति के तहत 1564 में आक्रमण किया, इस युद्ध में वीरनारायण घायल हो गया और रानी भी घायल हो गयी। तब रानी ने कटार मारकर आत्महत्या कर ली।

1564 में मुगलों का गोडवाना पर अधिकार हो गया।–

इसके बाद गोडवाना राज्य सदैव मुगलों के अधीन रहा।

**K. Explain Mughal Gondwana Struggle.**

Gondwana province situated in M.P. (Jabalpur, Damoh, Mandla etc). first time the Mughal-Godavana conflict began in Akbar's Time.

After the death of Godwana Naresh Dalvat Shah, Rani Durgavati ruled by becoming the protector of Veernarayan. Then the Mughal commander Asaf Khan attacked under the imperialist policy in 1564, Veeranarayan was wounded in this war and the queen also got injured. Then the queen committed suicide by stabbing herself to death.

The Goddess of the Mughals was empowered in 1564. -

Then Godwana state has always been under the Mughals.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
INDORE

**15 Marks**

3. **A. प्राचीन इतिहास के स्त्रोतों का उल्लेख करें।**

इसका उत्तर हम निम्न तरीके से लिख सकते है–

1. साहित्यिक स्त्रोत
2. पुरातात्विक स्त्रोत

***1. साहित्यिक स्त्रोत***

**(a) देशी साहित्य**

(i) धार्मिक साहित्य इसके अन्तर्गत हिन्दू, जैन, बौद्ध ग्रंथों का वर्णन करना है।

(ii) धर्म निरपेक्ष साहित्य इसके अन्तर्गत निम्न का वर्णन करें।

जैसे – कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कालिदास की रचनाये, विशाखादत्त आदि। संगम साहित्य, कल्हण की राजतंरगिनी आदि।

**(b) विदेशी साहित्य**

इसके अंतर्गत यूनानी, चीनी, अरबी आदि यात्रियों के विवरण लिखेंगे।

**2. पुरातात्विक स्त्रोत**

इसके अन्तर्गत निम्न बिंदु है–

1. अभिलेख 2. स्मारक 3. मिट्टी के बर्तन
4. कला सामग्री 5. सिक्के

**B. गुप्त युग का स्वर्ण युग काल्पनिक या वास्तविक है व्याख्या करें।**

**हम इस उत्तर को निम्न तरीके से लिख सकते है।**

**वास्तविक**

– महान सम्राटो का काल
– आर्थिक प्रगति का काल
– साहित्य एवं कला की समृद्धि का काल
– विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का काल
– वृहत्तर भारत का निर्माण
– राजनैतिक एकीकरण का काल
– धार्मिक सहिष्णुता का काल

**3. Write the sources of Ancient History.**

We can answer this in the following way:

1. Literary Source
2. Archaeological sources

***1. Literary Source***

**(a) Indigenous literature**

(i) Religious Literature - We describe the Hindu, Jain, Buddhist texts under religious literature.

(ii) secular literature - Describe the following under the secular literature

Like : Kautilya Arthashastra, Kalidas's literature, Visakhadatta etc. Sangam literature, Rajtarangini of Kalhan etc.

**(b) Foreign fictitious literature**

We will described the details of travellers of Greek, Chinese, Arabic etc.

**2. Archaeological sources**

It has the following points:

1. Inscription 2. Monuments 3. Pottery
4. Art materials 5. Coins

**B. Examine wheather the Gupta age was a golden period of Indian History or not.**

We can write this answer in following pattern.

**Actual**

- The era of great emperors
- The period of economic progress
- The great period of literature and art
- The age of science and technology
- Formation of Greater India
- Age of political integration
- The period of Religious tolerance

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

**काल्पनिक**

- चन्द्रगुप्त एवं समुद्रगुप्त को छोड़कर अन्य सम्राटों के समय अवनति का काल
- इनका साम्राज्य प्रत्यक्ष रूप से केवल उत्तर भारत में ही सीमित रहा।
- रोमन एवं वेजेटाइन साग्राज्यों का पतन, जिससे आर्थिक गतिविधियों में कमी आई।
- वस्तुविनिमय प्रणाली का होना।
- भूमिदान के कारण आर्थिक गतिविधियों में कमी।
- सामंतवाद का उद्‌भव
- सामाजिक कुरीतिया बाल विवाह, सती प्रथा, छुआछुत आदि।
- महिलाओं की स्थिति में गिरावट।
- बौद्ध एवं जैन धर्म का पराभव।
- आदि

**C. मराठा राज्य के उदय के कारणों का वर्णन करें।**

- मराठा राज्य के उदय के कारण निम्न है–

इसे हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर वर्णित कर सकते हैं।

1. भौगोलिक स्थिति
2. संतो की भूमिका
3. मुगलों का कमजोर पड़ना
4. मराठी भाषा
5. सामाजिक समानता
6. दक्कन के राज्यों की स्थिति
7. गुरिल्ला युद्ध पद्धति का प्रयोग
8. औरंगजेब की नीति
9. शिवाजी की भूमिका

**D. विजयनगर कालीन सामाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं का वर्णन करें।**

- विजयनगर साम्राज्य दक्षिण भारत के मध्यकालीन इतिहास का गौरव और ऐश्वर्य का काल रहा है जिसका प्रभाव हमें सामाजिक स्थिति में भी देखने को मिलता है।

विजयनगर साम्राज्य 4 भागों में बंटा था–

**Dreamy**

- Period of decline for other emperors except Chandragupta and Samudragupta
- Actually Gupta's empire only limited to North India.
- The collapse of Roman and Vezetine empire which leads to decline of economic activities.
- Decrease in economic activities due to land donation.
- Barter system
- The emergence of feudalism
- Social evilis like child marriage, sati practice, untouchability etc.
- Fall in the position of women.
- The decline of Buddhism and Jainism
- Etc.

**C. What wre the reasons for the rise of Maratha empire.**

The following is due to the rise of the Maratha state - We can describe it on the basis of the following points.

1. Geographical location
2. Role of various sants
3. Weakness of Mughals
4. Marathi language
5. Social Equality
6. Status of the states of Deccan
7. Use of guerrilla warfare
8. Aurangzeb's policy
9. Role of Shivaji

**D. What were the socio-cultural feature of Vijay Nagar Empire.**

The Vijayanagara Empire has been a period of pride and austerity in medieval history of South India, which has the effect of seeing us in social status also.

The Vijayanagara empire was divided into 4 parts-

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

विप्रलू, राजलू, मोतीकृतलू, नलवजटिवए।

समाज में ब्राह्मणों का उच्च स्थान था। सैनिक और असैनिक उच्च पदों पर नियुक्त होते थे। मध्य वर्ग में शेट्टी का महत्वपूर्ण स्थान था। उत्तर भारत से आकर बसे लोगों को 'बड़वा' कहा जाता था। दस्तकार वर्ग के लोगों को वीरपंचाल कहते थे।

स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक थी परन्तु समाज में कुछ कुरीतियाँ थी जैसे देवदासी, सतिप्रथा, बालविवाह दहेज आदि। स्वतंत्र रूप से जीने वाली महिलाओं का समाज में सम्मान था। दहेज और बाल विवाह को ब्राह्मणों ने अवैध घोषित कर दिया था। दास प्रथा प्रचलित थी। मनुष्य के खरीदे और बेचे जाने को 'वेस बाग' कहते थे।

मुख्य वस्त्र, सूती व रेशमी थे। ब्राह्मण को छोड़कर सभी वर्गों में मांसाहार और शाकाहार प्रचलित था परन्तु गोमॉस वचिंत था। शिक्षा का कार्य मंदिर व मठों द्वारा होता था। मनोरंजन के रूप में नाटक, संगीत, यक्षगान, शतरंज व पाँसे के खेल थे। स्वयं कृष्णदेवराय शतरंज के खिलाड़ी थे।

विजयनगर साम्राज्य में सांस्कृतिक संबंधों के रूप में कला, सांस्कृतिक आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई।

विजयनगर में मंदिर स्थापत्य का पर्याप्त विकास हुआ इस विजयनगर शैली के प्रारंभिक मंदिर श्रीशैल मंदिर, रामचद्र मंदिर आदि मिलते हैं। इसका परिपक्व रूप कृष्णदेव राय के समय बने बिट्ठल मंदिर और विरूपाक्ष मंदिर में देखा जा सकता है। इसमें सुन्दर अंलकृित स्तंभों का वर्णन किया गया है। मंदिर में हजार स्तंभ वाले मंडपों का अस्तित्व मिलता है मंदिर मंडप के अतिरिक्त एक कल्याण मंडप का निर्माण हुआ है। इसके अलावा रानी का स्नानागार, शाही समाकक्ष, कमल महल आदि भी बनाये गये हैं।

साहित्य के तहत संस्कृति, तेलगू, तमिल एवं कन्नड़ भाषा के साहित्य का विकास हुआ । कृष्णदेवराय ने से स्वयं तेलगू भाषा में आमुक्तमाल्यदा एवं संस्कृत में जाम्वतीयकल्याणम् नामक ग्रंथ की रचना की उनके दरबार में तेलगू भाषा के आठ महान विद्वान रहते थे। जिन्हें अष्टदिग्गज कहते थे। इनमे तेंनाली रामकृष्ण, अलसानी पेद्दन, सायण आदि थे।

कन्नड़ भाषा में कन्नड़ विद्वान मधुरा ने धर्मनाथ पुराण और अरूनंदी में तमिल भाषा में शिवनामा सितियार लिखा है।

Vipraloo, Rajalu, Motikirtalu, Nalvajativi

There was a high place of Brahmins in society. Soldiers and civilians were appointed on higher posts. Shetty had an important place in the middle class. The people settled in North India were called 'Badwa'. People of the artisan class were called Veerapanchal.

The status of women was respectful, but there were some virtues in the society like Devadasi, Sati, child marrioage Dowry etc. Independent women had respect in the society. Dowry and child marriage were declared illegal by the Brahmins. The slavery practice was prevalent. The buying and selling of human was called 'Wes Bag'

The main garments, cotton and silk were. nonveg and vegetarianism were practiced in all sections except Brahmin, but Gomas was prohibited. Education was done by temples and monasteries. In the form of entertainment, there were plays, music, yatras, chess and dance games. Krishnadevaraya himself was a chess player

In the Vijayanagar empire, significant progress has been made in the field of cultural, cultural, art and cultural fields.

There has been considerable development of temple architecture in Vijayanagara, the initial temple of this Vijayanagar-style Shree Shail temple, Ramachandra Temple etc are found. Its mature form can be seen in the vithal temple and Virupaksh temple built during the time of Krishna Deva Rai. It describes beautifully named pillars. There are thousands of holy pavilions(mandapam) in the temple. There is a Kalyan pavilion built in addition to the temple pavilion. Apart from this, the Queen's Bathhouse, Shahi Samakshak, Kamal Mahal etc. have also been made.

The literature of culture, Telugu, Tamil and Kannada languages was developed under the literature. , in the form of a book called 'Jumwatikayalayam' in Sanskrit and 'Ankumalaya' in Telugu language. Krishnadevaraya had eight great scholars of Telugu language, in his court. Those who were called Ashtadiggaj These were Tanelali Ramkrishna, Alsani Peddan, Sayan

In Kannada, Kannada scholar Madhura wrote Shivnamma Sitiyar. In Tamil language in Dharmnath Purana and Arunandi.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

इस काल में संगीत के क्षेत्र में पर्याप्त विकास हुआ। संगीत पर रामामातृ ने स्वर मेल कला निधि ग्रंथ लिखा। गणिकाओं की उपस्थिति से नृत्य संगीत का भी विकास हुआ।

**E. मुगल साम्राज्य के पतन में औरंगजेब की भूमिका की व्याख्या कीजिये।**

मुगल साम्राज्य की स्थापना बाबर ने की और अकबर ने इसे विस्तार दिया और संगठित किया। औरंगजेब ने साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार किया। लेकिन मुगल साम्राज्य में विघटन की दरार औरंगजेब के समय ही पड़ना शुरू हो गई।

औरंगजेब को अक्सर एक सख्त प्रशासक के रूप में जाना जाता था, जो न तो खुद को बख्शते थे और न ही उनके करीबियों को। इस्लामी कानून के प्रति औरंगजेब की कट्टरता और अन्य धर्मों के प्रति उनकी असहिष्णुता ने मुस्लिमों को अपने पक्ष में करने का कार्य किया। लेकिन हिंदुओं को मुगल साम्राज्य से दूर कर दिया। जो कभी अकबर के समय मुगल साम्राज्य की सुरक्षा के लिये तैयार रहते थे।

एक रूढ़िवादी मुस्लिम के रूप में, उसने मोटे तौर पर शरिया कानून के तहत उसने न केवल हिंदुओं को बल्कि शिया मुसलमानों को भी सताया। इसलिए दक्कन राज्यों (बीजापुर और गोलकुंडा) को मुगल साम्राज्य में मिलाने की जिद की। उसने हिन्दूओं पर सबसे अधिक घृणा करने वाले जजिया कर को 1679 में लगाया, तीर्थ कर और व्यापार कर लगाया, उनके मंदिरों और देवी–देवताओं को नष्ट कर दिया। इसके अलावा, औरंगजेब ने राजपूत की वफादारी पर अविश्वास किया और उसने सिखों को सताया। परिणामस्वरूप, मुगलों के शासन के खिलाफ राजपूत, सिख, जाट और मराठा शासक हुए।

इन युद्धों ने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था की सभी अंतर्निहित कमजोरियों को सतह पर ला दिया। दक्कन समस्या को हल करने में उनकी अक्षमता शाही खजाने का दिवालियापन साबित होती है। वह मराठा आंदोलन के वास्तविक स्वरूप को समझने में विफल रहा।

दक्कन राज्य के विलय से मुगल प्रशासन में संकट पैदा हो गया, जिसे जागीरदारी संकट के नाम से जाना जाता है। साम्राज्य की विशालता, आर्थिक संकट और साम्राज्य की कमजोरी ने क्षेत्रीय राज्यों का उदय किया। संक्षेप में, वीए स्मिथ ने ठीक ही तर्क दिया कि, दक्कन उसकी

There was considerable development in the field of music in this period. Ramaamatri wrote the Swarmelkalanidhi book on music, Dance music also developed with the presence of Ganika.

**E. Explain the Role of Aurangzeb in the decline of Mughal Empire?**

The Mughal empire was founded by Babar and Akbar expanded it and organized it. Aurangzeb expanded the empire most. But the crack of dissolution began to fall at time of Aurangzeb.

Aurangzeb was often known as a strict administrator, who neither spared himself nor his close friends. Aurangzeb's believe in Islamic law and his intolerance towards other religions made the Muslims work in his favor. But keep away the Hindus from the Mughal empire. Who were once prepared for the protection of the Mughal Empire during the time of Akbar.

As a conservative Muslim, he largely tortured not only the Hindus but also the Shia Muslim. Therefore, insistence of joining the Deccan states (Bijapur and Golkonda) in the Mughal Empire. He imposed the most disgusting Jijiya tax on Hindus in 1679, Imposed pilgrimage and trade tax, destroyed Hindus temples and deities. Apart from this, Aurangzeb mistreated Rajput's loyalty. As a result, Rajputs, Sikhs, Jats and Marathas revolted against the Mughals.

These wars brought all the underlying weaknesses of the Mughal administrative system to the surface. His inability to solve the Deccan problem proves bankruptcy of the Royal Treasury. He failed to understand the real nature of the Maratha movement.

The merger of the Deccan state caused a crisis in the Mughal administration, which is known as the Zagirdari Crisis. The vastness of the empire, the economic crisis and weakness of the empire created regional states. In short, VA Smith rightly argued that the Deccan proved to be the grave of his body along with his (Aurangzeb) reputation.

Aurangzeb could not establish coordination between both North and South. Marwar and Mewar struggle started due to his Rajput policy. Due to the abolition of Golconda and Bijapur in Deccan, it became easy for the Marathas to expand in the South. For all these reasons, Aurangzeb had sown seeds of Mughal decline.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

(औरंगजेब) प्रतिष्ठा के साथ–साथ उनके शरीर की कब्र साबित हुआ।

औरंगजेब उत्तर और दक्षिण दोनों के मध्य समन्वय स्थापित नहीं कर पाया। उसकी राजपूत नीति से मारवाड़ और मेवाड़ संघर्ष प्रारंभ हो गये। दक्कन में गोलकुंडा और बीजापुर को समाप्त कर देने से मराठों के लिये दक्षिण में विस्तार करना आसान हो गया। इन सब कारणों से औरंगजेब ने अपने ही समय पतन के बीज बो दिये थे।

औरंगजेब की मृत्यु के लगभग 150 साल बाद मुगल साम्राज्य चलता रहा। इसलिए औरंगजेब मुगल साम्राज्य के पतन के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार नहीं था। बल्कि, हमें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और संस्थागत कारकों के व्यापक पहलू को देखना होगा। फिर भी, जब तक औरंगजेब सिंहासन पर आया, तब तक विघटन का सामाजिक–आर्थिक बल पहले से ही मजबूत था। निष्कर्ष निकालने के लिए, हमें सतीश चंद्र के तर्क को लेना चाहिए, जिन्होंने कहा था औरंगजेब परिस्थितियों का शिकार था, और उसने ऐसी परिस्थितियों को बनाने में मदद की, जिसका वह स्वयं शिकार बन गया।

About 150 years after the death of Aurangzeb, the Mughal empire continued. Therefore, Aurangzeb was not entirely responsible for the fall of the Mughal Empire. Rather, we have to see the broader aspect of economic, social, political and institutional factors. Nevertheless, until Aurangzeb came on the throne, the socio-economic force of dissolution was already strong. In order to conclude, we should take the argument of Satish Chandra, who said that Aurangzeb was a victim of the circumstances, and he helped create such conditions, which he himself became a victim.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY
INDORE

## PART - B
## 3 MARKS

**1. डुप्ले**

– जोसेफ फ्रांसिस डुप्ले भारत में फ्रांसीसी गवर्नर जनरल था।

– इसके समय भारत में दो कर्नाटक युद्ध हुए थे रॉबर्ट क्लाइव के प्रतिद्वंदी थे।

**2. मीर जाफर**

– मीर जाफर सन 1757 से 1760 तक बंगाल का नवाब रहा।

– प्लासी के युद्ध में रॉबर्ट क्लाइव का साथ दिया।

– मीर जाफर को भारतीय इतिहास में महान विश्वाशघात के नाम से जाना जाता है।

**3. निकोलस – II**

(i) निकोलस – II रूस का अंतिम सम्राट (ज़ार) था। जिसने 1 नवंबर 1894 से 15 मार्च 1917 तक शासन किया।

(ii) 1905 में रूस में एक क्रांति के फलस्वरूप जार्ज निकोलस– II ड्यूमा नामक संसद की स्थापना की।

**4. द्वितीय आंग्ल–मैसूर युद्ध के दौरान भारत का गवर्नर जनरल कौन था ?**

– द्वितीय आंग्ल–मैसूर युद्ध के दौरान भारत का गवर्नर–जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स था।

**5. हेनरी विवियन डिरोजिओ**

– हैनरी विवियन डिरोजिओं कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज के अध्यापक व एक राष्ट्रभक्त भारतीय कवि थे।

– यंग बंगाल आंदोलन का इन्हें प्रवर्तक माना जाता है।

– हेनरी विवियन डिरोजिओं ने 'हेस्पेरस' और 'कलकत्ता साहित्यिक गजट' का संपादन किया।

**6. अगस्त प्रस्ताव**

– अगस्त सन् 1940 को वायसराय लार्ड लिनलिथगों द्वारा अगस्त प्रस्ताव पेश किया गया।

– प्रस्ताव में प्रथम बार भारतीयों द्वारा स्वयं संविधान

**1. Dupleix :**

- Joseph francis dupleix was the french governor general in India.
- He fought the two carnatic wars with the britishers for the supremacy in India.
- He supported Chandasahib and Muzzafar Jung to become the nawab of Carnetic and Hydrabad respectively.

**2. Mir Jafar :**

- Mir jafar was the nawab of bengal from 1757 -1760.
- He was initially the military commander under Sirajuddaula but he betrayed siraj and entered into conspiracy with robert clive. As a result of battle of plassey he became the nawab.
- He was succeded by his son- in -law Mir Qasim.

**3. Nicolas - II :**

- He was the last Emperor of Russia, ruling from 1894 until his forced abdication on 1917.
- His reign saw the fall of the Russian Empire from one of the foremost great powers of the world to economic and military collapse.
- He was given the nickname Nicholas the Bloody or Vile Nicholas by his political adversaries.

**4. Who was the governor general of india during the second anglo mysore war?**

- Warren hastings.

**5. Henry Vivian Derozio :**

- He was appointed as the professor in the hindu college .
- He was the founder of the young bengal movement.
- He exercised influence on the students and urged them to live and die for truth.

**6. August offer :**

- August offer was proposed on August 8 1940 by viceroy Linlithgow.
- It proposed for immediate expansion of governor general executive Council by including number of

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

निर्माण करने को स्वीकार किया गया।

– कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग दोनों ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

**7. महादेव गोविंद रानाडे**

– 1842 में नासिक में जन्में महादेव गोविंद रानाडे महाराष्ट्र के एक महान समाज सुधारक थे।

– इन्हें पश्चिम भारत का सुकरात भी कहा जाता है।

– इन्होंने प्रार्थना समाज व शारदा सदन की स्थापना की।

**8. आत्मीय सभा**

– आत्मीय सभा की स्थापना सन् 1815 में राजा राम मोहन राय ने की।

– आत्मीय सभा के द्वारा राजा राम मोहन राय एकेश्वरवादी मत के प्रचार तथा सामाजिक बुराईयों जैसे बाल विवाह, सती प्रथा आदि का विरोध किया।

**9. ईसूरी**

– भारतेन्दू युग के लोकप्रिय कवि हरताल ईसुरी का जन्म उत्तर प्रदेश के झॉसी जिले के मऊरानीपुर में हुआ।

– ईसुरी की रचनाओं में ग्राम्य संस्कृति एवं सौदर्य का वास्तविक चित्रण मिलता है।

– ईसूरी बुंदेलखण्ड के सबसे लोकप्रिय कवि है।

**10. झलकारी बाई**

– झलकारी बाई (22 नवम्बर 1830–1858) झॉसी की रानी लक्ष्मीबाई की नियमित सेना से महिला शाखा दुर्गा दल की सेनापति थी।

– भारत सरकान ने 22 जुलाई 2001 में झलकारी बाई के सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया।

– झलकारी बाई ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1857 के समय झॉसी के युद्ध में भारतीय बंगावत के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**11. चरण पादुका नरसंहार**

– 14 जनवरी 1930 को मध्यप्रदेश के छत्तरपुर जिला स्थित चरणपादुका ग्राम में शांतिपूर्वक चल रही बैठक में अंग्रेज कर्नल किशर के द्वार भीड़ पर अंधाधुंधा गोलियां चलवाने से 6 सेनानी शहीद हो गये थे, इस नरसंहार को ही चरण पादुका नरसंहार कहा जाता है।

– यह मध्यप्रदेश का जलियावाला बाग काण्ड कहलाता है।

Indians. And establishment of war Advisory Council comprising of representatives from British india .

- It was rejected by Muslim League and Congress.

**7. Mahadev Govind Ranade :**

- Mahadev Govind Ranade ( 1842 - 1901) was an Indian scholar, social reformer, justice and author.
- He was a founding member of the Indian National Congress party.
- During his life he helped to establish the Vaktruttvottejak Sabha, the Poona Sarvajanik Sabha and the Prarthana Samaj.

**8. Atmiya Sabha :**

- The association was started by Ram Mohan Roy in 1815 in Kolkata.
- They used to conduct debate and discussion sessions on philosophical topics, and also used to promote free and collective thinking and social reform.
- The foundation of Atmiya Sabha in 1815 is considered as the beginning of the modern age in Kolkata.

**9. Isuri :**

- Isuri was born in Moranipur village of Jhansi district.
- His full name was Hartaal Isuri.
- He was famous poet of bundelkhand region .
- His composition were written in the form of "faag ".

**10. Jhalkaribai :**

- Jhalkaribai was a woman soldier who played an important role in the Indian Rebellion of 1857.
- She served in the women's army of Rani Lakshmibai of Jhansi.

**11. Charanpaduka :**

- On 14th January 1930 at a place called Charan Paduka near Chattarpur town, a large meeting was held to protest against the princely rule.
- British forces dispersed the meeting and killed a number of people.
- It is known as The Jallianwala Bagh massacre of Madhya Pradesh.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

**12 ब्लिट्जक्रेग**

– ब्लिट्जक्रेक का तात्पर्य टैंको, पैदन सेना, तोपची सैनिक और वायु शक्ति के सभी यंत्रीकृत सैन्य दलों के अत्यंत गतिशीन स्वरूप है।

– ब्लिट्जक्रेग ऑपरेशन 1939–1941 के बीच ब्लिट्जक्रेग अभियानों के दौरान अत्यंत प्रभावशाली साबित हुए।

**13. खूनी रविवार**

– 22 जनवरी 1905 को रूस की जार सेना ने शांतिपूर्ण मजदूरों तथा उनके बीवी–बच्चों के एक जुलूस पर गोलियाँ बरसाई, जिसके करण हजारों लोगों की जान गई इस दिन चूँकि रविवार था, इसलिए यह खूनी रविवार के नाम से जाना जाता है।

**14. राफेल**

– राफेल इटली का प्रसिद्ध चित्रकार था।

– इस पुनर्जागरणकालीन कलाकार की चित्रकला पूर्णतः मौलिक एवं नवीन चेतना से युक्त थी।

– राफेल ने ईसा मसीह की माँ मेडोना के प्रसिद्ध चित्र बनाए।

**15. पूँजीवाद**

– पूँजीवाद सामान्यतः उस आर्थिक प्रणाली या तंत्र को कहते है जिसमें उत्पादन के साधन पर निजी स्वामित्व होता है।

– पूँजीवादी तंत्र सदैव लाभ के लिए चलाया जाता है।

– अमेरिका में पूँजीवादी व्यवस्था को अपनाया गया है।

**12. Blitzkrieg :**

- Blitzkrieg means lightining war is a method of warfare used by germany during the second world war whereby an attacking force, spearheaded by intense concentration of armoured and motorised or mechanised infantry is used to penetrate deep into enemy settlements.

**13. Bloody Sunday :**

- It is the name given to the events of Sunday, 22 January 1905 in St Petersburg, Russia, when unarmed demonstrators, were fired upon by soldiers of the Imperial Guard as they marched towards the Winter Palace to present a petition to Tsar Nicholas II of Russia.

- The massacre on Bloody Sunday is considered to be the start of the active phase of the Revolution of 1905.

**14. Raphael :**

- He was an Italian painter and architect of the High Renaissance.

- Together with Michelangelo and Leonardo da Vinci, he forms the traditional trinity of great masters of that period.

- His works includes : wedding of a virgin. ,lady with an ermin

**15. Capitalism :**

- Capitalism is an economic system based on the private ownership of the means of production and their operation for profit.

- Characteristics central to capitalism include private property, capital accumulation, wage labor, voluntary exchange, a price system, and competitive markets.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

# PART - B
## 6 MARKS

**1. प्लासी के युद्ध का वर्णन करते हुए इसके महत्व को लिखिए।**

बंगाल के नवाब सिराजुद दौला तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के मध्य 23 जून, 1757 को मुर्शीदाबाद के दक्षिण में नादिया जिले के 'प्लासी' नामक स्थान पर युद्ध हुआ जिसमें नवाब की सेना की पराजय हुई और कंपनी की जीत हुई। सही अर्थों में देखा जाए तो प्लासी की घटना एक नाटक थी। अंग्रेजों ने किसी विशेष सामजिक सैन्य योग्यता का प्रदर्शन नहीं किया। यही कारण है कि युद्ध में बंगाल सेना के 500 सैनिक मारे गए तथा इतने ही जख्मी हुए जबकि अंग्रेजी सेना के 23 सैनिक मारे गए व 49 जख्मी हुए।

प्लासी के युद्ध का महत्व – प्लासी का युद्ध सैन्य दृष्टिकोण से अत्यधिक निर्णायक नहीं कहा जा सकता, फिर भी इस युद्ध के राजनीतिक व आर्थिक परिणाम अधिक प्रभावी व दीर्घकालिक थे। प्लासी की विजय ने ईस्ट इंडिया कंपनी के स्वरूप में परिवर्तनद ला दिया। अब वह केवल व्यापारिक कंपनी न रहकर राजनीतिक सत्ता हो गयी। अंग्रेज राजा निर्माता (King maker) की भूमिका निभाने लगे। प्लासी के युद्ध का एक अतिरिक्त लाभ अंग्रेजों को यह हुआ कि अब उन्होंने बंगाल से अन्य विदेशी शक्तियों, तथा डचो, फ्रांसीसियों को उखाड़ कर उनकी चुनौति समाप्त कर दी।

**2. पुनर्जागरण की शुरूआत इटली से ही क्यो हुई ?**

पुनर्जागरण का सूत्रपात सर्वप्रथम इटली से हुआ, फिर वहां से इसका प्रसान जर्मनी, इंग्लैण्ड, फ्रांस आदि यूरोपीय राष्ट्रों में भी हुआ। पुनर्जागरण इटली में आंरभ होने के पीछे निम्नलिखित कारण थे –

– भौगोलिक स्थिति – इटली पश्चिमी एवं पूर्वी दुनिया के मध्य भू–मध्यसागर में स्थित था। इसके पश्चिमी एवं पूर्वी दुनिया के मध्य होने वाले ज्ञान के आदान–प्रदान का सर्वाधिक लाभ इटली को ही प्राप्त हुआ।

– व्यापारिक समृद्धि – अनुकूल भौगोलिक स्थिति के कारण यूरोप का अरब व एशिया के साथ होने वाला व्यापार में इटली मध्यस्थ की भूमिका निभाता था, जिससे वहां व्यापारिक समृद्धि आई। इटली की इस समृद्धि ने पुनर्जागरण को अनेक प्रकार से प्रोत्साहित किया।

**1. Describe battle of plassey and its significance?**

- The Battle of Plassey took place on June 23, 1757 at Palashi village of Murshidabad, on the bank of Bhagirathi River between British East India Company led by Robert Clive and Nawab of Bengal Siraj- ud -duala.
- The victory of British East India company in the Battle of Plassey is one of the important landmark in India History.
- The Battle of Plassey revealed the utterly corrupt political situation in Bengal.The Battle of Plassey paved the way for beginning of their empire.
- The British enjoyed the tax benefits, had to compete with no rival foreign merchants and began to use the revenue of Bengal for protecting their military and trade interest.

**2. Why did Renaissance first take place in Italy?**

- The Remains of the Roman Empire was an important factor in starting the Renaissance, this was because the people of Italy were constantly surrounded by ideas everywhere they went. There were many great ideas in Roman sculptures, art and architecture which were just waiting to inspire people.
- The Fall of Constantinople was another major reason the Renaissance started in Italy because when the Turks captured Constantinople in 1453 after the fall of the Eastern Roman Empire, scholars fled to Rome. They leaked important manuscripts which helped the advance of science and medicine.
- Trade was also a significant reason the Renaissance started in Italy because it brought many new things to Italy such as translated Roman texts. Many city states had their own trades. Florence's two greats trades were wool and cloth.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

– कुस्तुनतुनिया का पतन का प्रभाव– 1453 ई. में कुस्तुनतुनिया पर तुर्को का अधिकार हो जाने से वहां के विद्वान प्राचीन साहित्य की पांडुलिपि लेकर सर्वप्रथम इटालवी नगरों में आए। यहां इन विद्वानों की संख्या इतनी अधिक थी। कि लगता था कि यूनान का पतन नहीं हुआ था, अपितु उसका इटली में प्रवजन हो गया था।

– गौरवशाली रोमन सभ्यता – इटली के जनमानस को वहां की प्राचीन गौरवशाली सभ्यता ने भी प्रभावित किया। प्राचीन रोमन सस्कृति पुनर्जागरण का प्रेरणा स्त्रोत बन गई।

**3. रामकृष्ण मिशन पर एक लघु टिप्पणी कीजिए।**

– रामकृष्ण परमहंस (परमहंस मठ के संस्थापक) ने ध्यान एवं मुक्ति को पाश्चात्यीकरण एवं आधुनिकीकरण के तत्वों के साथ मिश्रण करते हुए ईश्वरो पासना का उपाय बताया। स्वामी विवेकानंद अपनी जिज्ञासा के कारण रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आए तथा उनके उपदेशों को लोगों के बीच प्रसारित किया। उन्होनें अपने गुरू परमहंस की स्मृति में 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। विवेकानंद और उनके द्वारा स्थापित मिशन ने पश्चिम की तथाकथित धार्मिक और सांस्कृतिक श्रेष्ठता की धारणा को चुनौती दी और हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की उपलब्धियों को प्रकाश में लाने का काम किया। उन्होंने वेदांत की व्यावहारिक व्याख्या की तथा आध्यात्मिकता और दैनिक जीवन की खाइयों को पाटने का प्रयास किया।

1 मई, 1897 को स्थापित रामकृष्ण मिशन का उद्देश्य मानवता की सेवा करना था। इसके सदस्यों ने 1897 के मुर्शिदाबाद के अकाल एवं कलकत्ता में प्लेग की बीमारी के समय जनता की बहुत सेवा की, रामकृष्ण मिशन ने अनक चिकित्सालय, अनाथालय, विद्यालय, सेवाश्रम, विधवाश्रम आदि खुलवाए।

पश्चिम के भौतिकवाद और पूर्व के अध्यात्मवाद के सम्मिश्रण को उन्होंने मानव जाति की भलाई का सबसे अच्छा मार्ग बताया और इस प्रकार रामकृष्ण मिशन ने भारतीय एवं पश्चिमी संस्कृति के संश्लेषण की भूमिका निभाई।

- Money contributed to the Renaissance because banks were developed in Florence. This was because the banking family, the Medicis were the most powerful family in Florence just as The Doge was the ruling family of Venice.
- Artists helped the Renaissance begin because many very talented artists lived in Italy such as Leonardo da Vinci, Michelangelo and Raphael.

**3. Write a short note on Ram Krishna Mission?**

- Ramakrishna Mission is a Hindu religious and spiritual organisation which forms the core of a worldwide spiritual movement known as the Ramakrishna Movement or the Vedanta Movement. The mission is named after and inspired by the Indian saint Ramakrishna Paramahamsa and founded by Ramakrishna's chief disciple Swami Vivekananda on 1897.
- The aims and ideals of the Mission are purely spiritual and humanitarian and has no connection with politics. Vivekananda proclaimed "Renunciation and service" as the twofold national ideals of modern India and the work of the mission strives to practice and preach these .
- Swami Vivekananda forbade his organisation from taking part in any political movement or activity, on the basis of the idea that holy men are apolitical.

The mission's activities cover the following areas :

- Education
- Health care
- Cultural activities
- Rural uplift
- Tribal welfare
- Youth movement etc.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

**4. फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों की क्या भूमिका थी ?**

क्रांति के पीछे बौद्धिक पृष्टभूमि का व्यापक आधार भी उत्तरदायी था। क्रांति से पूर्व फ्रांस में बौद्धिक क्रांति हो चुकी थी, जिसमें मॉण्टेस्क्यू वाल्टेयर एवं रूसों का अमूल्य योगदान रहा। मॉण्टेस्क्यू द्वारा सर्वप्रथम राज्य, राजा एवं व्यक्ति के मध्य संबंधों का विश्लेषण कियागया । वाल्टेयर ने तात्कालीन में राजतंत्र एवं उसके मुख्य अवयव, जैसे पादरी एवं कुलीन वर्ग की भ्रष्ट तथा अनैतिक मनोवृत्ति की खुलकर निंदा की तथा तत्कालीन व्यवस्था में परिवर्तन की जोरदार वकालत की। बौद्धिक आंदोलन में रूसों का योगदान सराहनीय रहा। स्वतंत्रता समानता एवं बंधुत्व जो फ्रांसीसी क्रांति के मूल अंग थें, रूसों के विचारों से ही प्रभावित थे रूसों की सामान्य इच्छा विषयक विचार काफी लोकप्रिय हुआ, जिसके अनुसार राज्य का कानून लोगों की इच्छा पर आधारित होना चाहिए न कि राजाओं की इच्छा पर। इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सोशल कॉन्ट्रेन्ट' में राज्य के अस्तित्व को समझौतावादी सिद्धांत, पर आधारित बताया। इन दार्शनिकों के योगदान की स्वीकारोंक्ति नेपोलियन के कथन यदि रूसों न होता तो क्रांति भी नहीं होती' में झलकती है। अर्थात दार्शनिक वर्ग की भूमिका क्रांति के दौरान 'उत्प्रेरक' के समान रही जिससे 'क्रांतिकारी अभिक्रिया में भले ही भाग नहीं लिया हो किंतु क्रांति को अवश्यभावी तथा नजदीक लाने का काम किया।

**4. What was the role of philosophers in the french revolution?**

- France in the 18th century had many revolutionary thinkers. Among them were Voltaire, Rousseau and Montesquieu . Their revolutionary ideas encouraged people to fight for their rights. They exposed the inefficiency of the monarch and his government and aroused the people to challenge authority.
- Voltaire attacked the Catholic Church. He believed man's destiny was in his own hands and not in heaven. His ideas encouraged people to fight against the privileges, and dominance of the Church without guilt.
- Montesquieu's philosophy outlined constitutional monarchy and division of powers. He believed all powers should not be concentrated in one person's hand.
- Rousseau asserted the doctrine of democracy and popular sovereignty. He believed that government should be based on the consent of the governed. In his book Social Contract, he talks of a contract between the ruler and the ruled.

**5. नेपोलियन क्रांति का पुत्र था ? टिप्पणी कीजिए।**

– नेपोलियन 'क्रांतिपुत्र' की संज्ञा देने के दो आयाम हो सकते है। प्रथम यह कि नेपोलियन का उदय (जन्म) क्रांतिजन्य परिस्थितियों की देन थी। इस तर्क को स्वीकार करने मे कोई समस्या भी नहीं दिखती क्योंकि क्रांति की कष्टदायक, अराजक, अव्यवस्था से ऊब चुकी फ्रांस की जनता शांति व व्यवस्था के लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार थी। इसलिए उसने नेपोलियन जैसे तानाशाह को न सिर्फ स्वीकार किया अपितु उसका स्वागत किया। स्वयं नेपोलियन की स्वीकारोक्ति ''यदि क्रांति नहीं होती तो मैं भी नही होता'' इसकी पुष्टि करती है। दूसरे अर्थ में क्रांतिपुत्र कहने का संदर्भ यह हो सकता है कि जिस प्रकार एक पुत्र अपने पारिवारिक मूल्यों और वंश परम्परा का पालन करा और उसे सहेजकर अगली पीढ़ी को सौपता है, उसी प्रकार नेपोलियन ने क्रांति के आदर्शों को सहेजा और निरंतरता प्रदान की। क्रांति के आदर्शों समानता, स्वतंत्रता ओर बंधुता को निरतंरता प्रदान करने में नेपोलियन की भूमिका सृजन व विश्वंसक के विरोधाभास से युक्त थी।

**5. Napolean was the son of revolution. Comment.**

- The French Revolution attempted to bring Enlightenment principles to governance, creating a society that was rational and equalitarian.
- Napolean on coming to power, perhaps unsure of his power and how far he would go, he claimed this new constitution would follow the ideas of the Revolution. The ideas of liberty, equality and fraternity were to constitute his representative government.
- Although Napoleon allowed the reestablishment of Roman Catholicism in France in 1800, he showed himself to be a "son of the revolution" by not allowing the Church to regain its former power.
- In some, but not all, ways, Napoleon also showed himself a son of the revolution through his Napoleonic Code. This code revamped and centralized the existing, inconsistent legal system to make it fairer and more rational.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

**6. राजा भोज के योगदानों पर संक्षिप्त लेख लिखिए?**

मुंज का उत्तराधिकारी सिंधुराज तथा सिंधुराज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र राजा भोज (1010–1060 ई) मालवा के परमार वंश का यशस्वी राजा था।

उदयपुर प्रशस्ति के अनुसार, उसके तुरूष्कों (तुर्कों) को पराजित किया तथा धार को अपनी राजधानी बनाया प्रशस्त्रियों के अनुसार भोज ने कलचुरी, गुजराज, कर्नाटक और दक्षिण में श्रीलंका तक अभियान किए। राजा भोज ने हिन्दुशाही शासक आनंद पाल को महमूद गजनी के विरूद्ध अभियान में सहायता दी। भोज ने चंदेल शासक विद्याघर के आक्रमण से धार की रक्षा की। पराजित होने के पश्चात भी उसने पुनः अपने क्षेत्रों पर अधिकार स्थापित किया था। 1055 ई. में चालुक्य शासक भीम द्वितीय ने कलचुरी शासक कर्ण से संधि करके मालवा पर आक्रमण कर दिया था। युद्ध के दौरान ही चिंता कमें पड़े भोज की मृत्यु हो गयी।

भोज ने भोपाल में भोजताल तथा धार में सरस्वती मंदिर व संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया। भोज कवि, दार्शनिक और ज्योतिषी थे। उन्हें कविराज भी कहा जाता था। भोज ने लगभग 84 ग्रंथों की रचना की।

**7. मध्यप्रदेश के विश्व धरोहर स्थलों पर प्रकाश डालिए।**

मध्यप्रदेश के तीन स्थान विश्व धरोहर स्थलों में शामिल है जो इस प्रकार है–

– भीमबेटिका के शैल आवास– भीमबेटका की गुफाएँ मध यप्रदेश के रायसेन जिले में स्थित है जो आदिमानव द्वारा बनाये गये शैलचित्रों और शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है इनकी खोज स्व. डॉ. विष्णुधर वाकणकर ने वर्ष 1957–58 में की थी। इन्हें वर्ष 2003 में यूनेस्कों की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है।

– खजुराहो मंदिर – मध्यप्रदेश के छत्तरपुर जिले ने स्थित खजुराहों के मंदिर भारतीय स्थापत्य एवं शिल्पकला के उत्कृष्ट उदाहरण है। नागरशैली में निर्मित इन मंदिरों का निर्माण 10 वीं और 11 वीं शताब्दी के मध्य चंदेल शासकों द्वारा करवाया गया था। वर्ष 1986 में खजुराहों के मंदिरों को विश्व धरोहर घोषित किया गया।

– सॉची बौद्ध स्तूप – सॉची रायसेन जिले में स्थित बौद्ध धर्म का प्रमुख तीर्थ स्थल है, जिसका निर्माण ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक ने करवाया था सॉची

**6. Write a short note on contribution of Raja Bhoj?**

- Bhoja was an king from the Paramara dynasty. His kingdom was centered around the Malwaregion in central India, where his capital Dhara-nagara (modern Dhar) was located.
- Bhoja is best known as a patron of arts, literature, and sciences. The establishment of the Bhoj Shala, a centre for Sanskrit studies, is attributed to him. He was a polymath, and several books covering a wide range of topics are attributed to him. He is also said to have constructed a large number of Shiva temples, although Bhojeshwar Temple in Bhojpur (a city founded by him) is the only surviving temple that can be ascribed to him with certainty.
- Because of his patronage to scholars, Bhoja became one of the most celebrated kings in the Indian history. After his death, he came to be featured in several legends as a righteous scholar-king.

**7. Throw light on the world heritage sites in Madhya Pradesh.**

Three sites in Madhya Pradesh have been declared World Heritage Sites by UNESCO:

- The Khajuraho Group of Monuments (1986)
- Buddhist Monuments at Sanchi (1989)
- The Rock Shelters of Bhimbetka (2003)

- The Khajuraho Group of Monuments is a group of Hindu temples and Jain temples in Chhatarpur district, Madhya Pradesh, India.The temples are famous for their nagara-style architectural symbolism and their erotic sculptures.
- Sanchi Stupa, is a Buddhist complex, famous for its Great Stupa, on a hilltop at Sanchi Town in Raisen District. It was originally commissioned by the emperor Ashoka in the 2nd century BCE.
- The Bhimbetka rock shelters are an archaeological site in central India that spans the prehistoric paleolithic and mesolithicperiods, as well as the historic period. It is located in the Raisen District .

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

स्तूप की खोज 1818 ई. में जनरल टेलर ने की थी। यूनेस्कों द्वारा वर्ष 1989 में सॉची स्तूप की विश्व धरोहर घोषित किया गया है।

**8. दादा भाई नौरोजी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्या योगदान रहा लिखिए।**

दादा भाई नौरोजी को भारत के वयोवृद्ध नेता के नाम से जाना जाता है। वे महाराष्ट्र के पारसी परिवार से संबंधित थे। इन्होंने एलकिस्टन कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की तथा गणित व दर्शन के प्राध्यापक के रूप में कार्य किया।

1852 में इन्होंने बम्बई की प्रथम राजनैतिक संस्था बाम्बे एशोशिएशन की स्थापना की। अपने लंदन प्रवास (1855–1869) के दौरान अंग्रेजो को भारतीय समस्याओं से परिचित कराने के लिए ईंस्ट इंडिया ऐसोसिएशन नाम की स्थापना की। इसके पश्चात कुछ समय तक बड़ौदा रियासत में उन्होंने दिवान के रूप में कार्य किया, किन्तु इस कार्य को छोड़ दिया, इसके पश्चात बम्बई नगर निगम में निर्वाचित हुए, वे कांग्रेस के संस्थापक थे। 1886, 1893 और 1906 में कांग्रेस के अध्यक्ष बने। दादा भाई नौरोजी अंग्रेजी राज्य की नीतियों का अनावरण किया और कहा कि यह राज्य भारत को दिन–प्रतिदिन लूटने में लगा है, जिसके कारण भारत निर्धन देश बनता जा रहा है। अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक इंडियन पार्वटी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया में सिद्ध किया। उन्होंने उत्तरदायी सरकार के स्थान पर राजनैतिक प्रशासन से सुधार न्यायपालिका, कार्यपालिका का न्यायपालिका से पृथककरण, भारतीयों की सेवाओं में नियुक्ति और समाचार पत्रों की स्वतंत्रता की मांग की।

**9. डांडी मार्च पर संक्षिप्त लेख लिखिए।**

डांडी मार्च को सॉल्ट मार्च और डांडी सत्याग्रह के नाम से भी जाना जाता है। 2 मार्च 1930 को गांधी जी ने वायसराय को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने ब्रिटिश शासन के दुष्प्रभावों तथा अपनी सूत्रीय मांगों का उल्लेख दिया, जो सरकार के सम्मुख पेश की गयी थी। उन्होंने कहा कि यदि सरकार उनकी मांगों को पूरा करने का कोई प्रयत्न नहीं करेगी तो 12 मार्च को नमक कानून का उल्लंघन करेंगे। सरकार द्वारा पत्र का कोई सार्थक जवाब न मिलने के विरोध में गांधीजी ने 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से अपने 78 समर्थकों के साथ डांडी के लिए पद यात्रा प्रारंभ की तथा 24 दिनों में 240 कि.मी. की पदयात्रा के पश्चात 5 अप्रैल को डांडी

**8. Contribution of dada bhai Naroji in the Indian freedom Struggle.**

- Popularly known as the "Grand Old Man of India", Dadabhai Naoroji
- He was the first Asian to be a member of British parliament. Naoroji was a prominent figure and play a significant role in Indian national movement.
- In 1866, Dadabhai Naoroji founded in London the East Indian Association for propagating the cause of India. Amongst the British and Indian nationals who joined the association was Womesh Chandra Bonnerjee who later became the first President of the INC.
- His unearthing of colonial economic exploitation is the most important contribution to Indian national movement.
- In his book, poverty and unbritish rule in India, he exposes the economic exploitation of India under British rule. He present, drain of wealth theory, which refers to unilateral transfer of wealth from India to Britain resulting in widespread poverty and severe famines.

**9. Write a short note on Dandi March?**

- The Salt March, also known as the Dandi March and the Dandi Satyagraha, was an act of nonviolent civil disobedience in colonial India led by Mohandas Karamchand Gandhi. The 24-day march lasted from 12 March 1930 to 6 April 1930 as a direct action campaign of tax resistance and nonviolent protest against the British salt monopoly. Mahatma Gandhistarted this march with 78 of his trusted volunteers. Walking ten miles a day for 24 days, the march spanned over 240 miles, from Sabarmati Ashram, 240 miles (384 km) to Dandi, Growing numbers of Indians joined them along the way.
- The satyagraha against the salt tax continued for almost a year, ending with Gandhi's release from jail

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
INDORE

पहुँचे। 6 अप्रैल को गांधी जी ने समुद्रतट में नमक बनाकर कानून तोड़ा। इसमें पहले गांधी जी की दाड़ी पदयात्रा के दौरान रास्ते में हजारों किसानों ने उनका संदेश सुना तथा कांग्रेस की सहस्थता ग्रहण की। कई ग्रमीणों ने सरकारी नौकरियों का परित्याग कर दिया।

डांडी मार्च को भारतीयों द्वारा, ब्रिटिश कानूनों के विरोध ा एवं साम्राज्यवाद की समाप्ति के प्रयासों के प्रतीक के रूप में देखा गया।

**10. मुस्लिम लीग की उत्पत्ति पर प्रकाश डालते हुए बताइए कि आखीर में वह अगल राज्य स्थापित करने में कैसे सफल हुयी।**

बंगाल विभाजन के कारण उत्पन्न सांप्रदायिक विभाजन की परिस्थिति में भारतीय मुसलमानों के अधिकारों की रक्षाा एवं उनका नेतृत्व करने के लिए ठाका के नवाब सलीमुल्लाह (हबीबउल्लाह) और आगा खाँ के नेतृत्व में 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। मुस्लिम लीग की प्रथम अध्यक्ष बकार–उल–मुल्क मुस्ताक हुसैन थे, नवाब सलीमुल्लाह इसके संस्थापक अध्यक्ष थे।

प्रथम राज्य पाकिस्तान की परिकल्पना कैंब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र चौधरी रहमत अली ने की थी। इसमें पूर्व 1930 में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधि ावेशन की अध्यक्षता करते हुए उर्दू कवि मोहम्मद इकबाल ने पश्चिमोत्तर भारत में मुस्लिम संगठित राज्य का उल्लेख किया था।

मार्च 1940 में मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन की अध यक्षता करते हुए मुहम्मद अली जिन्ना ने एक अलग मुस्लिम राष्ट्र (पाकिस्तान) की मांग की पंरन्तु जिन्ना द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में पाकिस्तान शब्द का जिक्र नहीं था। 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग ने सीधी कार्यवाही दिवस की शुरूआत कर दी इसके तहत सांप्रदायिक दंगे फैलाना तथा आतंक का माहौल निर्मित करना था तथा यह सिद्ध करना था कि हिन्दू–मुस्लिम द्विराष्ट्र है।

**11. रूस की क्रांति के मुख्य कारण क्या थे ?**

1917 ई. की रूसी क्रांति 20 वीं सदी के विश्व इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। रूसी क्रांति ने न केवल निरकुंश जारशाही की बल्कि जमीदारों, सामंतो तथा पूंजीपतियों की भी सत्ता को समाप्त कर विश्व में सर्वप्रथम मजदूरों व कृषकों की सरकार स्थापित की।

and negotiations with ViceroyLord Irwin at the Second Round Table Conference.

**10. Throw light on the evolution of the muslim legue, how was it ultimately succesful in creating a new state?**

After Bengal partition communal and sectarian rift was broadened and then to protect rights as well as to provide leadership for Indian muslims Nawab of Dhaka Salimullah (Habibullah) and Aga Khan established all India Muslim League in Dhaka on 30 December 1906.

Rehmat Ali was student of Cambridge University, who evolved fir time concept of Pakistan. Before him Urdu poet Mohamed Iqbal talked about United Muslim state in 1930's Muslim League session of Allahabad, then he had presided that session.

In March 1940 Mohammad Ali Jinnah demanded for separate Muslim state in Muslim League session of Lahore, that session was presided by Jinnah himself. But he did not specifically mention Pakistan as name of that Muslim country. On 16 August 1946, Muslim League started Direct Action Day.

Through Muslim League wants to prove Hindu-Muslim two state theory with the help of communal violence and terror in these two communities.

**11. What were the causes of Russian Revolution?**

The Main causes of Russian Revolution of 1917 are as :

1. World War I was a disaster for Russia as millions of soldiers and civilians were killed and there were economic crises and people were dissatisfied with the government. So it became a cause of Revolution.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

रूसी क्रांति में पीछे तात्कालीन कारण के साथ–साथ कुछ दीर्घकालिक कारण भी उत्तर दायी थी।

– राजनीतिक कारण :–

रूस का जार निकोलस द्वितीय निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी या/जार द्वारा गैर रूसी जातियों रूसी धर्म एवं संस्कृति अपनाने हेतु विवश किया जा रहा था। फलतः ऐसी जातियां भी जारशाही की विरोधी हो गयी।

– सामाजिक कारण :–

रूसी समाज मुख्यतः 2 भागों में विभाजित था। विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग जिसमें सामंत, जार के कृपा पात्र व बड़े पूंजीपति थे। दूसरा अधिकार विहीन वर्ग था। जिसमें किसान, मजदूर मध्यम वर्ग शिक्षक व बुद्धिजीवी था। अधिकार हीन वर्गों में उच्च वर्ग के विरूद्ध घृणा का भाव व्याप्त हो गया। अतः इसी वर्ग संघर्ष ने क्रांति को जन्म दिया।

आर्थिक कारण :–

रूस में कृषकों की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। रूस की जनसंख्या में लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा कृषको का था। किंतु 7 प्रतिशत भूमि जमीदारों के एवं 13 प्रतिशत भूमि चर्च व धार्मिक पुजारियों के अधिकार में थी। बहुसंख्यक कृषक भूमिहीन थे। कम उत्पादन के बावजूद भी कृषकों को अपनी उपज का एक हिस्सा जार व जमीदारों को देना पड़ता था। ऐसी स्थिति में कृषकों का विद्रोही होना स्वाभाविक था।

**12. पिट्स इंडिया एक्ट 1784 क्यों महत्वपूर्ण है ?**

पिट्स इंडिया एक्ट से पहले फॉक्स ने इंडिया बिल प्रस्तुत किया था जिसके अनुसार कंपनी की राजनीतिक व सैनिक शांति 7 आयुक्तों में बोर्ड को सौफी जानी थी उनके अधीनस्थ 9 उपनिदेशकों को व्यापारिक कार्य दिये जाने थे। यह वित्त हाउस ऑफ कॉमर्स में पारित हो गया। परन्तु हाउस ऑफ लाईस में पारित नहीं हो सका। परिणाम स्वरूप लार्ड नार्थ और फॉक्स कि मिली–जुली सरकार को त्याग पत्र देना पड़ा। यह पहला और अंतिम अवसर था। जब किसी भारतीय मुद्दे पर ब्रिटिश गिर गई। कंपनी पर अपनी प्रभाव को मजबूत करने के उद्देश्य मसे ब्रिटिश संसद ने 1784 ई. में पिट्स इंडिया एक्त पारित किया। यह एक्ट के माध्यम से दृढ़ सदस्यीय नियंत्रण बोर्ड की व्यवस्था की गई। इस नियंत्रण बोर्ड को भारतीय प्रशासन के संबंध में निरीक्षण, निर्देशन तथा नियंत्रण संबंधी व्यापक अधि

2. Despotic and autocratic rule of Czars especially the later ones increased the public unrest which was also an important cause of Russian Revolution.

3. The Policy of Russification i.e One Czar, One Church and One Russia by Czar Nicholas II also added fuel to the fire.

4. The pathetic condition of serfs, labors and workers was also the main cause of Russian Revolution.

5. The Labor Organisations increased consciousness among the labors which also became an important cause of Revolution.

**12. Why was pitts india act 1784 significant?**

The Pitt's India Act, 1784 also called the East India Company Act, 1784 was passed by the British Parliament to correct the defects of the Regulating Act of 1773. This act resulted in dual control of British possessions in India by the British government and the Company with the final authority resting with the government.

It was significant because :

- This act made a distinction between the commercial and political activities of the East India Company.
- For the first time, the term 'British possessions in India' was used.
- This act gave the British government direct control over Indian administration.
- The Company became subordinate to the British government unlike as in the previous Regulating Act

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

ाकार दिए गए, हालांकि कंपनी के व्यापार को अद्ता छेड़ दिया गया। इस एक्ट में प्रमुख प्रावधान इस प्रकार थे :–

भारत का प्रशासन गर्वनर जनरल व इसकी तीन सदस्यीय परिषद के हाथ मे रहेगा। परिषद सहित गर्वनर जनरल को इस बात का अधिकार होगा कि वह अन्य प्रेसीडेंसी कार्योहं का निरीक्षण नियत्रंण तथा निर्देशन कर सके।

पिट्स अधिनियम द्वारा प्रांतीय गर्वनरों की कार्य कारिणी के सदस्यों की संख्या चार से घटाकर तीन कर दी गई। इनमें से एक सदस्य स्थानीय मुख्य सेनापति होता था।

of 1773, where the government only sought to 'regulate' matters and not take over.

- This act established the British Crown's authority in civil and military administration of its Indian territories. Commercial activities were still a monopoly of the Company.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

## PART - B
## 15 MARKS

**1. भाषाई आधार पर राज्यों के पुर्नगठन की परिस्थितियों पर निबंधात्मक वर्णन कीजिए।**

भाषा व संस्कृत का गहरा संबंध होता है तथा इसका असर जनता के रीति रिवजों पर भी पड़ता है।

राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने सर्वप्रथम 1917 में ही स्वतंत्रता के बाद होने वाले राज्यों के गठन की भाषायी आधार पर करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की थी। स्वतंत्रता के बाद नए भारत में प्रांतों का गठन भाषायी आधार र करने का समर्थन गांधी, नेहरू, पटेल व अन्य कांग्रेसी नेताओं द्वारा भी किया गया था।

भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन उचित है या नहीं, इसकी जॉच के लिए संविधान सभी के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसान ने न्यायाधीश एस. के. धर की अध्यक्षता में 1908 में एक आयोग का गठन किया गया। इस आयोग में राष्ट्रीय एकता को खतरा एवं प्रशासन को भारी असुविधा का तर्क देकर भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का विरोध किया।

दिसंबर 1948 में धारा आयोग के निर्णय की समीक्षा करने के लिए कांग्रेस कार्य समिति में अपने जयपुर अधि ावेशन में जवाहर लाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल और पट्टाभि सीता रमैया की सदस्यता में एक समिति (जे. वी. पी. समिति) का गठन किया। इस समिति ने भी भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग को खारिज कर दिया। परन्तु जे.वी.पी. समिति की रिपोर्ट के बाद मद्रास राज्य के तेलुगु–भाषियों ने ..... श्री रामुल्ल के नेतृत्व में आंदोलन प्रारंभ किया 58 दिन के आमरण अनशन में उनकी मृत्यु के बाद तेलुगु भाषियों के लिए पृथक आंध्र पेदश के गठन की घोषणा कर दी। आंध ाप्रदेश के बन जाने के बाद भाषायी आधार राज्यों के निर्माण के लिए जन आक्रोश और तीव्र हो गया अतः नेहरू द्वारा अगस्त 1953 में एक और राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन कर दिया गया। इस आयोग ने अक्टूबर 1955 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। फजल अली की अध्यक्षता में गठित राज्य पुनर्गठन आयोग ने सलाह दी कि राष्ट्रीय एकता, प्रशासनिक व वित्तीय व्यवहार्यता, आर्थिक विकास, अल्पसंख्यकों के हितों का संरक्षण और भाषा को राज्यों के पुनर्गठन का आधार बनाया। सरकार ने इस आयोग की संस्तुतियों को थोड़े–बहुत संशोधन

**1. Write a short essay on circumstances leading to reorganisation of States in India on linguistic basis.**

- At the time of independence in 1947, the grouping of states was done on the basis of political and historical considerations rather than on linguistic or cultural divisions, but this was a temporary arrangement. On account of the multilingual nature and differences that existed between various states, there was a need for the states to be reorganized on a permanent basis.
- In 1948, SK Dhar - a judge of the Allahabad High Court - was appointed by the government to head a commission that would look into the need for the reorganization of states on a linguistic basis. However, the Commission preferred reorganisation of states on the basis of administrative convenience including historical and geographical considerations instead of on linguistic lines.
- In December 1948, the JVP Committee comprising Jawaharlal Nehru, Vallabh bhai Patel and Pattabhi Sitaramayya was formed to study the issue. The Committee, in its report submitted in April 1949, rejected the idea of reorgansation of states on a linguistic basis but said that the issue could be looked at afresh in the light of public demand.
- In 1953, the first linguistic state of Andhra for Telugu-speaking people was born. The government was forced to separate the Telugu speaking areas from the state of Madras, in the face of a prolonged agitation and the death of Potti Sriramulu after a 56-day hunger strike. Consequently, there were similar demands for creation of states on linguistic basis from other parts of the country.
- On December 22, 1953, Jawaharlal Nehru appointed a commission under Fazl Ali to consider these new demands. The commission submitted its report in 1955 and it suggested that the whole country be divided into 16 states and three centrally administered areas. The government, while not agreeing with the recommendations entirely, divided the country into 14 states and 6 union territories under the States Reorganisation Act that was passed in November 1956. The states were Andhra Pradesh, Assam, Bihar, Bombay, Jammu and Kashmir, Kerala,

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

के साथ स्वीकार कर लिया तथा 1956 में राज्य पुरर्गठन अधिनियम पारित किया गया। इसके अंतर्गत 14 राज्यों तथा 6 केन्द्रशासित प्रदेश बनाए गए। राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 भी राज्यों के पुनर्गठन के पश्न का स्थायी समाधान नहीं कर सका उसके बाद से राज्यों की संख्या बढ़ते–बढ़ते 14 से 29 हो गयी तथा अभी कई राज्यों की मांगे उठायी जा रही है। संघ राज्य क्षेत्र भी अब 6 से बढ़कर 7 हो गए।

**2. मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**

1886 में कलकत्ता में हुए कांग्रेस में द्वितीय अधिवेशन में मध्यप्रदेश के वापूराव, ..... , गंगाधर चिटनिस एवं अब्दुल अजीज ने भाग लिया। 1891 ई. में हुए नागपुर में हुए कांग्रेस के 7 वें अधिवेशन में मध्यप्रदेश के लोगों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हुई।

– असहयोग आंदोलन (1920)

यह आंदोलन म.प्र. में 1920–21 में असहयोग आंदोलन व खिलाफत आंदोलन की शुरूआत साथ–साथ हुई। इसका नेतृत्व अब्दुल जब्बार खॉ ने किया था। 1922 ई. में भोपाल रियासत में स्थित सीहोर कोतवाली के सामने विदेशी के ..... होली जलाई गई थी।

– झण्डा सत्याग्रह :–

1923 में इसकी शुरूआत जबलपुर में हुई थी। जिसमें पंडित सुन्दरलाल शर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, लक्ष्मण सिंह चौहान इत्यादि शामिल थे। जबलपुर नगरपालिका भवन पर तिरंगा फहराने पर सुंदरलाल शर्मा को 6 माह की सजा दी गई।

– नमक सत्याग्रह :–

6 अप्रैल 1930 ई. में मध्यप्रदेश में इसकी शुरूआत जबलपुर के पास रानी दुर्गावती समाधि वरेला से सेठ गोविन्द दास एवं द्वारिका प्रसाद के नेतृत्व में हुई थी।

– जंगल सत्याग्रह (1930) :–

1930 ई. में म.प्र. के टुरिया (सिवनी) तथा घोड़ा–डोंगरी (बैतूल) में जंगल सत्याग्रह हुआ था। टुरिया (सिवनी) में ओरवा लोहार सेनापति एवं घोड़ा–डोंगरी (बैतूल) में गंजनसिंह कोरकू व बंजारी कोरकू के नेतृत्व में विद्रोह हुआ था।

– चरण पादुका सत्याग्रह :–

म.प्र. के छतरपुर जिला स्थित चरण पादुका ग्राम में

Madhya Pradesh, Madras, Mysore, Orissa, Punjab, Rajasthan, Uttar Pradesh and West Bengal. The six union territories were Andaman and Nicobar Islands, Delhi, Himachal Pradesh, Laccadive, Minicoy and Amindivi Islands, Manipur and Tripura.

**2. Write a short note on freedom struggle in Madhya Pradesh.**

The Revolt of 1857 in M.P. have been parallel to freedom struggle of India.

- It affected an extensive region from Meerut to Maharashtra, involving all sections & religions of Indian society. Only after a month of the spark of revolt in Meerut and Delhi it spread to far areas of India and swept in Sagar, Narmada territory & Malwa regions, including territory of Nagpur.
- By August 1857 the entire area to the north of Narmada went in possession of freedom fighters. Several independent rulers were annexed to British territory fought bravely in the revolt.
- Rani of Ramgarh(Avanti bai), Rani of Jhansi(Laxmi bai), Tatya Tope, Bakhtawar Singh, Sheikh Ramzan, Shankar shah were few of them.
- 1st out break of the revolt in M.P. took place on 3rd June 1857 in Neemuch cantonment area where the infantry & cavalry together revolted and put the cantonment on fire soon after the Indian soldiers at Murar cantonment rebel and destroyed all the communication channel between & Shivpuri and Gwalior .

The other important events that took place in Madhya Pradesh were :

JHANDA SATYAGRAHA

The main leaders which emerged in this revolt are Pt. Sundardas , Subhadra kumara Chouhan, Nathuram Modi, Laxman Singh Chouhan, Narsingh das Agarwal & Premchand Jain.After that 2nd group of leadership emerged under the leadership of Premchand Jain & Chiggalal Sawankar and they hoisted flag in Town hall of Jabalpur. The congress core committee also decided to host Jhanda Satyagrah in Nagpur under the leadership of Jamunalal Bajaj on 13 April 1923.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

शांतिपूर्वक चल रही बैठक में अंग्रेज कर्नल फिशर के द्वारा मील पलटन पर अंधाधुंध गोलियां चलवाने से 6 सेनानी शहीद हो गये। इसे म.प्र. का जलिया वाला बाग हत्याकाण्ड कहते है।

– पंजाब मेल काण्ड (1939) :–

दिल्ली से मुंबई जा रही पंजाब मेल में वेढे देवनारायण तिवारी, वीर यशवंत सिंह एवं दलपत राव ने खण्डवा के पास अंग्रेज अधिकारी व उसके कुत्ते को ट्रेन से नीचे फेक दिया था।

– त्रिपुरी अधिवेशन (1939) :–

1939 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन त्रिपुरी (जबलपरु) में हुआ था। जिसकी अध्यक्षता सुभाषचन्द्र बोस ने की थी।

– भारत छोड़ो आंदोलन (1942) :–

इसकी शुरूआत ग्वालियर रियासत में स्थित विदिशा से हुई थी।

GHODADONGRI JANGAL SATYAGRAHA

Tribal dominated Betul district always remain the main center for freedom struggle the tribals of this area sacrifice their life against the British Rule.

At the time of forest satyagraha in the year 1930, the tribal community of Betul, held the revolt under the leadership of Gunjan Singh Korku of Banjari dhal near shahpur.

TURIYA JUNGAL SATYAGRAHA

In the year 1930 when gandhiji started Civil Disobedient Movement at that time under the leadership of Durgashankar Mehta. Forest Satyagraha was started by the Congress leaders of Seoni. On 9th of October the date of Satyagraha was decided at Turiya village Seoni district .

CHARANPADUKA

On 14th of jan 1931, on the occasion of Makar Sankranti, on assembly of freedom fighters took place in Charanpaduka of Chhararpur district and the large number of people gathered there. In Between the event the English commander Fisher of Nowgaon order to fire on crowd without pre warming due to which 6 freedom fighters Seth Sundarlas Dharamdas Kherwa, Halke Kurmi, Ram lal khurmi & Raghuraj Singh sacrifice their life in their event which is famously known as Jallianwala Bagh Massacre of Madhya Pradesh.

QUIT MOVEMENT IN MADHYA PRADESH

The movement started from Vidisha and four Gwalior state along with Hoshangabad , Narsingpur, Raipur and other parts of MP. These leaders are Ravi Shankar Shukla, Malini Sarbate, Atal bihari, Bajpayee, Sankar dayal Sharma, Bitthaldas Bajaj.

**3. औद्योगिक क्रांति क्या थी ? वह सर्वप्रथम इंग्लैंड में ही क्यो हुई।**

औद्योगिक क्रांति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1837 में फ्रांस के समाजवादी नेता जेरोम एडोल्फ ब्लांकी ने किया था, आगे इंग्लैण्ड के ऑर्नाल्र्ड टायनवी ने इसे लोकप्रिय बनाया। ओद्योगिक क्रांति आकस्मिक घटना नहीं है, अपितु विकास की सतत् प्रक्रिया है, जो वर्तमान में चल रही है।

औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में हुआ, इसका तात्पर्य उत्पादन प्रणाली में हुए आधारभूत परिवर्तनो

**3. What was industrail revolution. Why did it first take place in england?**

- The Industrial Revolution, which took place from the 18th to 19th centuries, was a period during which predominantly agrarian, rural societies in Europe and America became industrial and urban. Prior to the Industrial Revolution, which began in Britain in the late 1700s, manufacturing was often done in people's homes, using hand tools or basic machines. Industrialization marked a shift to powered, special-purpose machinery, factories and mass production.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

से है। इसके परिणामस्वरूप जनसाधारण को घरेलु उद्योग धंधों को छोड़कर नए प्रकार के वृद्ध उद्योगों में काम करने तथा नवीन साधनों का अवसर मिला औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ इंग्लैण्ड से ही क्या ?

– भौगोलिक स्थिति :– इंग्लैण्ड की अनुकूल भौगोलिक स्थिति औद्योगिक क्रांति में सहायक सिद्ध हुई। इंग्लैण्ड चारो ओर से समुद्र से घिरा हुआ था जिससे वहां व्यापारिक आवागमन हेतु उन्हे बंदरगाह उपलब्ध थे। साथ्ज्ञ इंग्लैण्ड की जलवायु भी होने के कारण वहां वस्त्र उद्योग हेतु अनुकूल परिस्थितियां थी।

– प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता :–

इंग्लैण्ड के पास कोयला एवं लोहे के विशाल भण्डार थे साथ ही इंग्लैण्ड का क्षेत्र कम होने के कारण ये दोनों संसाधन पास–पास उपलब्ध थे। इन दोनों खनिजों के निकट उपलब्धता के कारण इंग्लैण्ड में औद्योगिक विकास हेतु अनुकूल परिस्थितियां थी।

– इंग्लैण्ड का औपनिवेशिक विस्तार :–

यूरोपीय राष्ट्रों के मुकाबले इंग्लैण्ड का औपनिवेशिक साम्राज्य अधिक विस्तार था। कच्चे माल और बाजार की उपलब्धता ने पूंजीपतियों को उद्योगों में धन लगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

– शासन वर्ग व समाज का चरित्र :– इंग्लैण्ड के शासन में पूंजीपति वर्ग का प्रभुत्व था। जो अधिक प्रगतिशील एवं परिवर्तन समर्थक था।

– राजनीतिक स्थिरता एवं शांति :– इंग्लैण्ड में 1688 ई. की गौरवशाली क्रांति के उपरांत राजतंत्र पर संसद की प्रमुखत स्थापित हो चुकी थी। जिसके समावेश राजनीतिक स्थिरता एवं शांति थी।

– वैज्ञानिक एवं तकनीकि क्रांति :–

यूरोप के अन्य राज्यों की तुलना में इंग्लैण्ड में वैज्ञानिक वातावरण अधिक उपयुक्त था। यही कारण था कि विभिन्न देशों में जन्में वैज्ञानिक विचारों एवं अविष्कारों का तकनीकि के रूप में सर्वप्रथम प्रयोग इंग्लैण्ड में ही किया।

फलतः इंग्लैण्ड औद्योगिक क्रांति अग्रणी रहा।

**4. भारत मे ब्रिटिश शासनकाल में घटित जनजातीय विद्रोह का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**

ब्रिटिश औपनिवेशिक शोषण के विरूद्ध भारत में अनेक विद्रोह हुए। जिनमें से जनजातिय विद्रोहों का विशेष

- Industrial Revolution took place first in england because :

1. Geographical location of england : no part of country was far from the sea. This allowed equal urbanisation of all parts of england.
2. The climate of england is not extreme and moderate all year round. This increase labour productivity as labour could work for longer hours.
3. England is blessed with abundance of coal and iron and these natural resources help the industries with heap supply of iron especially in the second phase of the imdustrail revolution.
4. England had an extensive colonial empire which acted as an export market for machine manufactured products of england.
5. England was the first country to adopt the policy of lassiz faire which means non interference of the govt. In the market.
6. England by now had become a protestant country they were forward looking and hard working people who beleived in scientific advancements.

**4. Write a short note on tribal revolts that took place in india durimg british rule?**

- The Tribal population, being conservative, was interested in retaining the existing salient features of their society. Tribal movements were inspired by

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

महत्व है। यद्यपि जनजातियों के द्वारा किए गए ज्यादातर विद्रोह कुचल दिए गये, किन्तु इन विद्रोहों की असफलता से निचले स्तर में भी ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति असंतोष उत्पन्न हो गया। जिसका लाभ स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय नेताओं को प्राप्त हुआ। प्रमुख जनजातीय विद्रोह निम्न है।

– रमोसी विद्रोह (1822–29 ई.) :–

पश्चिमी घाट की रमोसी जनजाति अंग्रेजी प्रशासन से नाराज थी उसके नेता सरदार चिन्तर सिंह ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया, किंतु अंग्रेजी सेना द्वारा इसे दबा दिया गया।

– भील विद्रोह (1825–31 ई.) :–

पश्चिमी घाट सेवाराम भील के नेतृत्व में भीलों ने नवीन अंग्रेजी कानूनों के विरूद्ध विद्रोह किया। माना जाता है कि इस विद्रोह में भीलों को पेशवा बाजीराव द्वितीय का भी सहयोग प्राप्त किया गया था। किन्तु अंग्रेजी सेना द्वारा इसे कुचल दिया गया।

– कोल विद्रोह (1831–32 ई.) :–

छोट नागपुर की जनजाति कोल ने चावल की नशीली शराब पर लगाये गये उत्पादन शुल्क के विरोध में बुद्धों भगत व गंगा नारायण के नेतृत्व में विद्रोह किया गया, जिसे ब्रिटिश सेना द्वारा कुचल दिया गया।

– खासी विद्रोह (1833 ई.) :–

अंग्रेजों ने जयंतिया पहाड़ी के आसपास के क्षेत्रों को जीतने के पश्चात यहां नवीन मार्ग बनवाने के क्रम में खासी जनजाति को बेगारी करने हेतु बाध्य किया, जिसके विरोध में तीरह सिंह के नेतृत्व में विद्रोह किया गया, जिसे ब्रिटिशों द्वारा कुचल दिया गया।

– संथाल विद्रोह (1855 ई.) :–

बिहार के राजमहल जिले में अत्यधिक भूमि कर एवं पुलिस दमन के विरूद्ध संथालों ने सिंधू एवं कान्हू के नेतृत्व में विद्रोह किया, किन्तु 1856 ई. तक इनकी हत्या कर इस विद्रोह को कुचल दिया गया।

– मुंडा विद्रोह (1899–1900 ई.) :–

बिरसा मुंडा के नेतृत्व में बिहार के छोटा नागपुर में मुंडा जनजाति द्वारा सामूहिक खेतों को प्रतिबंधित किये जाने के कारण यह विद्रोह किया गया।

revolutionary tendencies. They wanted to make use of the situation to fight and eliminate evils and ill-tendencies that existed in the contemporary tribal society.

**1. Peasant Uprising of Rangpur, Bengal (1783 AD)**

After 1757 AD, the British established their control over Bengal and they started extracting as much as possible from peasants through revenue contractors. When peasant's grievances were not redressed by the company officials, they took the law in their hands. Under the leadership of Dirjinarain, they attacked the local cutcheries and storehouses of crops of local agents of the contractors and government officials

**2. The Uprising of the Bhills (1818-31 AD)**

- The Bhills were mostly concentrated in the hill ranges of Khandesh. The British occupation of Khandesh in 1818 AD enraged the Bhills because they were suspicious of the outsider's incursion into their territory.

**3. The Kol Uprising (1831-32 AD)**

- The Kols of Singhbhum enjoyed their sovereignty for long centuries under their chiefs. After the advent of the British East India Company, the sovereignty of Kol tribes penetrated by the British law and order which causes tensions among the tribal people. They got angry when British transfer tribal land to the outsiders like merchants and moneylenders which caused a great threat to the hereditary independent power of the tribal chiefs. They revolted the despotic law and order of the British East India Company. This uprising spread over Ranchi, Hazaribagh, Palamau and Manbhum. British East India Company ruthlessly suppressed the revolt and established their control over Kol tribal areas.

**4. The Mappila Uprising (1836-54 AD)**

- Among all the peasant uprisings, it occupies an important place because this revolt challenges the colonial rule. Mappillas were the descendants of Arab settlers and converted Hindus who were cultivating tenants, landless labourers, petty traders and fisherman. When British East India Company established their rule over Malabar Coast brought hardship in the life of the Mappilas especially through land revenue administration. They revolted against the state and landlords. The British armed forces

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

swung into action to suppress the rebels but failed to subdue them for many years.

**5. The Santhal Rebellion (1855-56 AD)**

- This revolt occurred in the Rajmahal hills of the Santhal region under the leadership of Sidhu and Kanhu. It began as a reaction against the outsiders, particularly landlords, police and moneylenders.

**6. The Ramosi Uprisings (1822-29 AD)**

- It took place in two phases- Fist in 1822 AD under the leadership of Chittu Singh in 1822 AD against the new pattern of British administration. The second phase of revolt took place between 1825-26 and 1829 AD.

**7. The Munda Uprising (1899-1900 AD)**

- It took place in the Chhotanagpur region near Ranchi under the leadership of Birsa Munda. This revolt is also known as Ulgulan revoltwhich means 'great commotion.

**8. Jatra Bhagat and Tana Bhagat Movement (1914 AD)**

- This movement was started by Jatra Bhagat in 1914 AD. It was a movement for monotheism, abstention from meat, liquor and tribal dance. The Jatra Bhagat and Tana Bhagat movements stressed both anti-colonialism and internal reforms.
- The Tribal rebellion in India took place for social, cultural and political reasons, particularly against the acquisition of their land and exerted their rights over forest resources.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE